ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(A Central University Established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

बी.एड. पाठ्यक्रम
सत्र- 2021-23
पाठ्यक्रम कोड : BEd - 012

द्वितीय सेमेस्टर
पंचम पाठ्यचर्या
पाठ्यचर्या कोड : BEd- 025
पाठ्यचर्या का शीर्षक : विद्यालय विषय शिक्षण II (हिंदी शिक्षण)

दूर शिक्षा निदेशालय
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा - 442001 (महाराष्ट्र)

द्वितीय सेमेस्टर : शिक्षा 025 हिंदी शिक्षण

मार्गदर्शन समिति

प्रो. गिरीश्वर मिश्र
कुलपति
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

प्रो. आनंद वर्धन शर्मा
प्रतिकुलपति
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

प्रो. अरबिंद कुमार झा
निदेशक, दूर शिक्षा निदेशालय
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

पाठ्यचर्या निर्माण समिति

प्रो. अरबिंद कुमार झा
अधिष्ठाता, शिक्षा विद्यापीठ
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर
सह. प्रो., शिक्षा विद्यापीठ
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

श्री ऋषभ कुमार मिश्र
सहा. प्रो., शिक्षा विद्यापीठ
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

संपादन मंडल

प्रो. अरबिंद कुमार झा
निदेशक, दूर शिक्षा निदेशालय
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

डॉ. दीपक पुनसे
सह प्रोफ़ेसर
स्वालंबी शिक्षण महाविद्यालय,वर्धा

डॉ. रामार्चा पाण्डेय
सह. प्रो., शिक्षा विद्यापीठ
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

डॉ. गुणवंत सोनोने
सहा प्रोफ़ेसर, शिक्षा विद्यापीठ
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

श्री धर्मेंद्र शंभरकर
सहा प्रोफ़ेसर, शिक्षा विद्यापीठ
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

इकाई लेखन

समन्वयक- डॉ. भरत कुमार पंडा

इकाई -1
डॉ. भरत कुमार पंडा

इकाई -2
डॉ. भरत कुमार पंडा

इकाई -3
डॉ. भरत कुमार पंडा

इकाई -4
डॉ. भरत कुमार पंडा

इकाई -5
डॉ. भरत कुमार पंडा

अनुक्रम

क्र.सं.	इकाईयों का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	इकाई – 1 परिचय	6-15
2.	इकाई – 2 भाषा शिक्षण	16-25
3.	इकाई – 3 भाषा कौशलें	26-37
4.	इकाई – 4 पाठ्यक्रम तथा पुस्तकें	38-55
5.	इकाई – 5 विभिन्न विधाओं का शिक्षण	56-68

प्रधान संपादक की कलम से.....

संपादक की कलम से.....

इकाई – 1 परिचय

1.0 इकाई परिचय
1.1 शिक्षण के उद्देश्य
1.2 विषय विवेचन
    1.2.1भाषा का स्वरूप
        1.2.1.1 समाज में भाषा,
        1.2.1.2 भाषा और लिंग
        1.2.1.3 भाषा और अस्मिता
        1.2.1.4 घर की भाषा, बच्चे की भाषा, स्कूल की भाषा
    1.2.2 संविधान और शिक्षा समितियों की सपोर्ट में भाषा
        1.2.2.1 ताराचन्द समिति – (1948)
        1.2.2.2 मुदलियार शिक्षा आयोग – (1952-53)
        1.2.2.3 कोठारी आयोग – (1964-66)
        1.2.2.4 सुनीति कुमार चटर्जी आयोग – 1956;56
1.2.3 वर्तमान पाठ्यचर्या में में हिन्दी का स्थान
1.2.4 हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य
    1.2.4.1 मातृभाषा शिक्षण का उद्देश्य
    1.2.4.2 दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण का उद्देश्य
1.2.5 भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त
    1.2.5.1 अध्ययन का सिद्धान्त
    1.2.5.2 स्वाभाविकता का सिद्धान्त
    1.2.5.3 प्रभाव का सिद्धान्त
    1.2.5.4 रुचि का सिद्धान्त
    1.2.5.5 अभिप्रेरणा का सिद्धान्त
    1.2.5.6 क्रियाशीलता का सिद्धान्त
    1.2.5.7 जीवन समन्वय का सिद्धान्त
    1.2.5.8 वैयान्तिक भिन्नता का सिद्धान्त
1.3 सारांश
1.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर
1.5 शब्दावली
1.6 कार्य आवंटन
1.7 क्रियाएँ
1.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)
1.9 संदर्भ पुस्तकें

1.0 इकाई परिचय

भाषा को अभिव्यक्ति का साधन माना जाता है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि भाषा मनुष्य के व्यक्तित्व से जुड़ी वह अमूल्य निधि है जिसके द्वारा उसकी समस्त व्यवहारिक चेष्टाएँ, क्रियाएँ सम्पन्न होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि भाषा द्वारा ही बिचारों की अभिव्यक्ति संभव है, किन्तु जहाँ तक भाषा के व्यावहारिक रूप का प्रश्न है भाषा के विविध रूप देखे जा सकते है। जिनको इस इकाई में स्पष्ट किया जा रहा है।

1.1 शिक्षण के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे:

1. भाषा के विभिन्न रूपों का ज्ञान प्राप्त करना।
2. भाषा की भूमिका का ज्ञान प्राप्त करना।
3. भाषा के बारे में शिक्षा समितियों की रिपोर्टों का ज्ञान प्राप्त करना।
4. हिन्दी भाषा-शिक्षण के उद्देश्यों का ज्ञान प्राप्त करना।
5. हिन्दी शिक्षण का विभिन्न सिद्धान्तों की उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त करना।
6. वर्तमान पाठ्यचर्या में हिन्दी के स्थान ज्ञान का प्राप्त करना।
7. हिन्दी भाषा के महत्व के बारे ज्ञान प्राप्त करना।

1.2 विषय विवेचन

1.2.1भाषा का स्वरुप

‘‘अभिव्यज्यते इति भाषा।’’ भाषा शब्द संस्कृत की भाष धातु से बना है इसका अर्थ है व्यक्त वाणी। अर्थात् व्यक्त रूप से जिसकी अभिव्यक्ति की जाती है उसे भाषा की संज्ञा दी जाती है। भाषा अन्त: मन से जुड़ी भाबनाओं की प्रकाशिका होती है। मनुष्य अपने विचारों की अभिव्यक्ति हेतु वागेन्द्रिय का सहारा लेता है तथा अभिव्यक्ति के रूप में ध्वनियाँ माध्यम का कार्य करती है। इस दृष्टि से भाषा और ध्वनि का अटूट सम्बन्ध है। भाषा और कुछ नहीं ध्वनियाँ का समूह है। मनुष्य के मस्तिष्क में पहले विचार उठते हैं फिर वही विचार ध्वनियों के सम्प्रेषण के द्वारा अभिव्यक्ति का माध्यम बनते हैं। जब हम मौखिक रूप से विचारों को व्यक्त करते हैं, तो ध्वनियों का उपयोग करते हैं। तब ध्वनियाँ अक्षरों के रूप अभिव्यक्ति का माध्यम बनती हैं। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि भाषा का मूल आधार ध्वनियाँ होती है। इस तथ्य की पुष्टि प्रसिद्ध कवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य में इस प्रकार किया है-

वागर्थाविवसम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।

जगत: पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ ।।

ध्वनि एवं अर्थ इस प्रकार जुड़े हैं जैसे ‘‘पार्वती और परमेश्वर।’’ अर्थात् आत्मा और शरीर के सम्बन्ध की तरह भाषा व विचारों का सम्बन्ध ध्वनि से है।

सारांशत: भाषा मनुष्य के विचारों की वाहिका है। व्यापक अर्थ में भाषा विचारों की अभिव्यक्ति अथवा संप्रेषण के लिए अपनाया जाने वाला साधन है।

1.2.1.1 समाज में भाषा

भाषा समाजगत प्रक्रिया है। चूँकि व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहते हुए सामाजिक सम्बन्धों को दृढ़ बनाने में भाषा उसका पूरा सहायोग देती है। बालक अपने सामाजिक वातावरण द्वारा वांछित शब्दों का चयन करते हुए विकास की ओर अग्रसर होता है। भाषा उसे व्यवहारयुक्त बनाते हुए समाज में समायोजित करने में पूर्ण सहयोग देती है, इसलिए भाषा को समाज से इतर नहीं माना जा सकता। एवं भाषा बिना समाज की कल्पना भी निराधार है। न केवल सामाजिक अपितु देश का सांस्कृतिक आर्थिक, शैक्षिक विकास भी भाषा के विकास पर निर्भर करता है। इस से स्पष्ट है कि भाषा एक समाज सापेक्ष प्रक्रिया है।

1.2.1.2 भाषा और लिंग

भाषा एक व्यवस्था है। भाषा चाहे कोई भी हो उसका एक निश्चित क्रम होता है। व्यवस्था का आशय संकेतात्मक ध्वनियों के एक निश्चित क्रम से है। इस सन्दर्भ तथ्य विचारणीय है कि यह आवश्यक नहीं है। कि प्रत्येक भाषा की संरचना का स्वरूप एक हो। भाषा संरचना के स्वरूप में भी अन्तर पाया जाता है जैसे भाषा में लिंग व्यवस्था भिन्न-भिन्न भाषाओं में अलग होती है। संस्कृत में शब्दों का लिंग होता है, लेकिन क्रियापद में लिंग का प्रभाव नहीं होता है। वहीं हिन्दी भाषा में लिंगों के अनुसार प्रत्ययों एवं क्रियापदों में परिवर्तन देखा जाता है। लिंगों के आधार से वाक्य सरंचना में परिवर्तन होने वाली भाषा में लिंग ज्ञान को महत्वपूर्ण माना जाता है। संस्कृत में भी यदि कर्म वाच्य का प्रयोग किया जाता जा रहा है। कर्म पद का लिंग के अनुसार क्रिया पद का लिंग भी परिवर्तित होता है। अत: भाषाओं वाक्य रचना में कर्ता, कर्म, क्रिया की तरह लिंग का सही प्रयोग ही उच्चारण की अभिव्यक्ति को सफल बनाता है।

1.2.1.3 भाषा और अस्मिता

भाषा समाज की एक प्रक्रिया है। भाषा द्वारा ही समस्त क्रिया व्यापार संचालित होते हैं। अतः एवं सामाजिक एवं सांस्कृतिक अस्मिता को अक्षुण्ण रखना भाषा का प्रमुख कार्य है। अस्मिता से जुड़ी भाषा का आशय प्राचीन संस्कृति, साहित्य, परम्पराएँ, विविध कलाओं से है जिसके द्वारा वे सुरक्षित होती हैं। जैसे-वेद, पुराण, उपनिषद, आरणयक, रामायण, महाभारत आदि अमूल्य धरोहर गन्थों वाली संस्कृत भाषा भारत की अस्मिता है। वैसे प्रत्येक संस्कृति परम्परा साहित्य आदि अस्मिता से जुड़े तथ्व किसी न किसी भाषा से संरक्षित होते हैं। अत: भाषा अस्मिता की वाहिका है।

1.2.1.4 घर की भाषा, बच्चे की भाषा और स्कूल की भाषा

घर की भाषा से तात्पर्य घरों में बोली जाने वाली भाषा पर किसी प्रान्त विशेष अथवा प्रदेश विशेष का प्रभाव होता है। अर्थात् प्रान्तविशेष अथवा प्रदेशों में बोली जाने वाली भाषा घरों में बोली जाती है। भारत एक ऐसा देश है जहाँ प्रादेशिक भाषाओं का भी बाहुल्य दिखाई पड़ता है एवं प्रदेशों में प्रादेशिक भाषाओं के अलावा उपभाषाएँ भी बोली जाती हैं। जो घर की भाषा हो सकती है।

बच्चों की निश्चित भाषा नहीं होती है। जब कि प्रारम्भिक अवस्था में बच्चे की ध्वनि केवल सांकेतिक साधनों तक ही सीमित रहती है। अर्थात् वह प्रारम्भ में विभिन्न संकेतों व ध्वनियों के माध्यम से विचारों की अभिव्यक्ति करता है जो अस्पष्ट किन्तु सार्थक होती हैं। परवर्ती अवस्था में अपने घरों में बोली जाने वाले प्रान्तीय भाषा को धीरे-धीरे आन्तसात करता है। अत: मातृभाषा के रूप में स्थिर होता है। जैसे कि एक व्यक्ति जिसकी मातृभाषा या धर की भाषा बंगला है और यदि वह उत्तरप्रदेश में निवास करता है तो निश्चित रूप से बंगल व हिन्दी भाषा की जानकारी हो जाती है और बंगला एवं हिन्दी उस वाक्ये का अपनी भाषा हो जाते है।

मातृभाषा व्यवहार की दृष्टि से परिस्कृत एवं बोधगग्य होती है। जिसे बालक सहण हो अपनी अनुकरणजन्य प्रवृत्ति के कारण के अत: विद्यालयों में क्रियामिक शिक्षा के माध्यम के भाषा प्रान्तिय भाष यानि मातृभाषा ही है। प्राथमिक स्तर का किवद्यालय की प्रान्तभाषा के अलावा अन्यभाषा भी पढाई जाती है परन्तु प्रामश: शिक्षा के माध्यम हिन्दी है। कारण भारत के अधिकांश राज्यों के व्यक्तियों की मातृभाषा हिन्दी अथवा हिन्दी सम्बन्धित भाषा दृष्टि है। एवं माध्यम भाषा को हि विद्यालय को भाषा मानी जाती है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. भाषा के विविध स्वरूपों को बताइए ?
2. घर की भाषा, और स्कूल की भाषा में अंतर बताइए ?

1.2.2 शिक्षा समितियों की सपोर्ट में भाषा

शिक्षा में मातृभाषा, भाषा, विदेशी भाषा आदि भाषाओं की अपना अपना स्थान है। बालक के स्वाभविक और मनोविज्ञानिक विकास तथा सामाजिक और राष्क्रिय आवश्यकताओं की दृष्टि से मातृभाषा, राष्ट्रभाषा तथा संस्कृति भाषा का प्रमुख स्थान है, उच्च शिक्षा में अन्तराष्ट्रीय भाषा का विदेशी भाषा की आवश्यकता पड़ती है। शिक्षा की व्यवस्था में भाषाओं को स्वभाविक स्थान है। परन्तु भारत में भाषा शिक्षा एक समस्या बनी हुई है। इन्ही समस्याओं के बारे में विभिन्न समितियों, आयोगों तथा परिषदों ने संस्कतुतियाँ दी है।

1.2.2.1ताराचन्द समिति – (1948)

माध्यमिक शिक्षा में सुधार हेतु इस समिमित की नियुक्ति की गई। डॉ ताराच्नद की अध्यक्षताये 1948 में समिति का गठन हुआ। इसकी संस्तुतियाँ इस प्रकार था –

कक्षा 6 से 8 तक मातृभाषा के अतिरिक्त अंग्रेजी को कुछ समय तक अनिवार्य रखना जाए।
माध्यमिक स्तर में मातृभाषा के अतिरिक्त अंग्रेजी को कुछ समय तक अनिवार्य रखा जाए।
परन्तु अंग्रेजी हर जाने पर संघीय भाषा को अनिवार्य करा जाए।

1.2.2.2 मुदलियार शिक्षा आयोग – (1952-53)

शिक्षा का माध्यम मातृभाषा या क्षेत्रिय भाषा हो
पूर्व माध्यमिक स्तर पर दो भाषाएँ शिक्षा दी जाएँ। उसमें अंगेजी भाषा रहे।
उच्च माध्यमिक स्तर में दो भाषाओं की शिक्षा दी जाएँ।
प्रथम भाषा- मातृभाषा / शैत्रिय भाषा

द्वितीय भाषा – हिन्दी / अंग्रेजी / अन्यभारतीय भाषा सांस्कृति भाषा

1.2.2.3 कोठारी आयोग – (1964-66)

कोठारी आयोग ने द्विभाषी सूत्र का संशोधन किया। इस आयोग ने तीन भाषाओं के अध्ययन को अनिवार्य करने की संस्कृति की।

(1) प्रथम भाषा – मातृभाषा / क्षेत्रीय भाषा
द्वितीय भाषा – केन्द्र की राजा भाषा / सह राज भाषा
तृतीय भाषा – भारतीय भाषा/विदेशी (जो शिक्षा का माध्यम न हो या प्रथम द्वितीय से भिन्न हो।)

1.2.2.4 सुनीति कुमार चटर्जी आयोग – 1956-56

प्रथम भाषा-मातृभाषा
द्वितीय भाषा – अंग्रेजी
तृतीय भाषा – संस्कृत/ हिन्दी (माध्यम भिन्न भाषा)

भाणी –

केन्द्रीय शिक्षा सलाहाकार माडल (1956) त्रिभाणी सूत्र के रूप में भषा शिक्षा समस्या को समाधान किया 1 सन् 1957 में इस सूत्र को स्वीकृति दी आार सन् 1961 में मुख्मन्त्रियों के सम्मेलन में त्रिभाषा सूत्र की पुष्टि भी कर दी इस सूत्र के अनुसार प्रत्येक भारतीय बालक को तीन भाषाओं का अध्ययन करना अनिवार्य हो-
प्रथम – मातृभाषा / क्षेत्रीय भाषा
द्वितीय – अंग्रेजी भाषा / संस्कृत भाषा
तृतीय – हिन्दी (अंग्रेजी प्रदेशियों के लिए / अन्य भारतीय भाषा

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. भाषा के बारे में विभिन्न समितिओं के मत को स्पष्ट करें?
2. संविधान में भाषाके बारे में क्या कहा गयाबताइए?

1.2.3 वर्तमान पाठयचर्या में मातृभाषा में रुप में हिन्दी

विद्यालय में शिक्षा व्यवस्था के पाठयक्रम के द्वारा शिक्षक तथा छात्रों के लिए उकने कार्यो का दिशा निदेश किया जाता है। अत: विद्यालय पाठयक्रमों में मातृभाषा को विशेष स्थान दिया जाता है।

1. मातृभाषा की शब्दाबली के माध्यम से बालक का बहुमुखि विकास होता है। बालक का स्थार्यभावों, संवेगो तथा मूल्यों का मातृभाषा से धनिष्ठ सम्बन्ध होता है।

2. बाल-मनो विकास का माध्यम तथा स्थान मातृभाषा की शिक्षा है। मातृभाषा को स्वाभाविक रूप से सोख लेता है।
3. विद्यालय सभी विषयों का ज्ञान तथा बोध् मातृभाषा से कराया जाता है। मातृभाषा के माध्यम से अन्य विषयों को सीखने तथा बोधगम्य करने में सरलता होती है। अत: मातृभाषा को स्थान माठयक्रम में महत्वपूर्ण है।
4. मातृभाषा से ही भिन्नत सुझबुझ की समताओं का विकास होता है।
5. मातृभाषा से शिक्षा का स्वरूप मनौविज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित होता है। ''ज्ञात से अज्ञात'' तथा सरल से कठिन की और'' सूत्रों का प्रयोग होता है। और लेखन में पाठयक्रम का ज्ञान होता है उसी ही अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित होती है।

अत: हिन्दी भाषी राज्यों में हिन्दी का मातृभाषा के रूप में पाठयक्रम में महत्वपूर्ण स्थान है।हिन्दी को राजभाषा का स्थान प्राप्त हुआ है। भारत में प्राय 45% लोग का हिन्दी बोल चाल की भाषा है, और सम्पर्क भाषा के रूप में हिन्दी महत्वपूर्ण मानी जाती है। अत: राष्ट्रीय पाठयक्रम में माध्यम भाषा में रूप में हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए अहिन्दी भाषी राज्यों में भी पाठयक्रम में द्वितीय का तृतीय भाषा के रूप में महत्वपूर्ण स्थान है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. वर्तमान पाठ्यचर्या में हिन्दी का स्थान को स्पष्ट करें ?

1.2.4 हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य

हिन्दी भाषा को मातृभाषा के रूप में भारत के अधिकांश क्षेत्रों में पढाया जाता है। दक्षिण भारत तथा अन्य कुछ राज्यों का यह दूसरी भाषा के रूप में पढाया जाता है। यदपि भाषा शिक्षण के उद्देश्यों को ज्ञानात्मकास, कौशलात्मक, सर्जनात्मक, अभिवृत्यात्म, सौन्दर्यानुभत्यात्मक रूप से बांटा जाते है, परन्तु यहाँ मातृभाषा के रूप में शिक्षण उद्देश्य एवं दूसरी भाषा के रूप में शिक्षण उद्देश्य के रूप में दो भाषाओं में उपस्थापित करते हैं।

1.2.4.1 मातृभाषा शिक्षण उद्देश्य

(1) उच्चारण शुद्ध की समता प्रदान करना।
(2) विचारों को क्रमश: क्रमबद्ध रूप से विकसित करना।
(3) मनोवाचन से सहजग्राह्यता की समता निर्माण करना।
(4) शब्द भण्डार में बृद्धि करना।
(5) अपने शब्दों से अभिव्यक्ति की समता उत्पन्न करना।
(6) कविता का सस्वर वाचन क्षमता निर्माण करना।
(7) लिपि का सही ज्ञान करना।
(8) पठन कला में निपुण बनाना।

(9) निबन्ध, संवाद, सारांश-पत्र आदि लिखने की दक्षता पैदा करना।

(10) व्याकरण नियम से परिचित कराना।

(11) अभिनय, अनुकरण, एवं संवार की योग्यता पैदा करना।

(12) स्वरचित कविता तथा निवन्धादि के लिए प्रौत्साहन देना।

(13) छात्रों में लिखित अभिव्यक्ति की भैतियों एवं विधाओं का ज्ञान कराना।

(14) भाषा के व्यावहारिक विश्लेषण में समर्थ बनाना।

(15) सामान्य समालोचन एवं चिन्तन की प्रवृत्ति का विकास करना।

1.2.4.2 दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की उद्देश्य

(1) शुद्ध, सरल, स्पष्ट एवं प्रभावशाली भाषा में अभिव्यक्ति की क्षमता उत्पन्न करना।

(2) शबदों वाक्यांशो, तथा लोकोक्रियों का ज्ञान प्राप्त करना।

(3) शुद्धता एवं गति का निरन्तर विकास करते हुए वाचन का अभियास करना।

(4) ज्ञान तथा निवेक का विकास करते हुए चरित्र निर्माण करना।

(5) भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों की पहचान एवं सुधार करना।

(6) भासिक तत्वों में परस्पर अन्तर तथा सम्बन्ध ज्ञात करना।

(7) लेखन कला के द्वारा अपने भावों एवं विचारों को व्यक्त करने की योग्यता विकास करना।

(8) गद्यवध, नारक, कहानी भाषा की अलग अगल विद्यालयों को पढकर अर्थ ग्रहण करने की समता विकास करना।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. मातृ भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की उद्देश्य बताइए?
2. दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की उद्देश्य बताइए?

1.2.5 भाषा शिक्षण के सामान्य सिद्धान्त

भाषा शिक्षण के सिद्धान्त बालकों की स्थितियों प्रवृत्तियों, व्यक्तिगत भिन्नताओं क्शमताओं आदि के आधार से निर्धारित होते है। भाषा शिक्षण में जिन सामान्य सिद्धान्तों का ध्यान रखा जाना आवश्यक है, वे निम्न –लिखत है:-

1.2.5.1 अभ्यास का सिद्धान्त

जिस कार्य का अध्यास जितना प्रभावि होता है, वह उतना स्थिर होता है। अत: भाषा जैसा कलात्मक पक्ष के लिए अभयास सर्वथा आवश्यक है। अध्यास से भाषा तीव्रतर गति से सुदृढ होती है।

1.2.5.2 स्वाभाविकता का सिद्धान्त

भाषा प्रवाह है। परिवेश से भाषा स्वाभाविक रूप से आ जाती है। जैसे बालक मातृभाषा को स्वाभाविक रूप से सीखवता। अन्य भाषा सेप्रो में भी व्यक्ति उस भाषा परिवेश में स्वाभाविक रूप से लिख लेता है।

1.2.5.3 प्रभाव का सिद्धान्त

यह सिद्धान्त हर शिक्षण क्षेत्र में होता है। जैसे व्यक्ति किसी भाषा में टुटे-फुटे शब्दों में अपना अपना अभिव्यक्ति प्रकर करता है, एवं उसे प्रतिक्रिया प्राप्त होती है, तब उस प्रतिक्रिया से प्रभावित हो कर व्यक्ति उस भाषा को बोलता है और भाषा सिख जाता है।

1.2.5.4 रुचि का सिद्धान्त

यह सिद्धान्त में रुचि का महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा के प्रति रुचि, भाषा सम्बन्धित संस्कृति, परम्परा, साहित्य के प्रति रुचि भाषा सिखने के लिए अभिप्रेरित करता है। जैसे कई व्यक्ति मातृभाषा भिन्न होने पर भी कई अन्य भाषाएँ सिख लेते है।

1.2.5.5 अभिप्रेरणा का सिद्धान्त

अभिप्रेरणा का सिद्धान्त – भाषा शिक्षण में कई अभिप्रेरणा के रूप में कार्य करते है। जैसे वस्तु, मॉडल, भिन्न आदियों के द्वारा बच्चों में जिज्ञासा उत्पन्न किये जाते है, जिज्ञासा रूपक अभिप्रेरणा बच्चे तद सम्बन्धित भाषा जाता है। अन्तासरी, वादीववाद, भाषण आदि से भाषा शिक्षण में प्रेरित होता है।

1.2.5.6 क्रियाशीलता का सिद्धान्त

यह क्रियाशीलता का सिद्धज्ञन्त भाषा को सुदृढ बनाता भाषा का लिखित मौखिक कार्यो का अभ्यास से भाषा स्वाभाविक हो जाता है, सहज एवं शीघ्रग्राह्य भी होता है। अत: भाषा शिक्षण में साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन महत्वपूर्व होता है।

1.2.5.7 जीवन समन्वय का सिद्धान्त

लेखन, पठन के अलावा भाषा का वाव्स्तविक जीवन कसे सम्बन्ध घनिष्ठ है। अत: लेखन पठन भाषो अलावा और कई भाषाएँ शिख लेता है, वे भाषाएँ कर्मक्षेत्र, जीवन साधन क्षेत्रों से जीवन यापन करते हुए लिखता है।

1.2.5.8 वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धान्त

व्यक्तिगत विभिन्निता भाषा शिक्षसा का आधार बनता है। जैसे कई व्यिक्त नियमनुसार होते है कई भाषाएँ सहल से सिख लेते है। शुद्ध उचचारण, स्पष्ट लेखने सटीक वाचनप भी आदियों में वैयक्तिक भिन्नताएँ पाई जाती है और वे भाषा शिक्षण में प्रभाव डालते है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. भाषा केवैयक्तिक भिन्नता और जीवन समन्वयसिद्धान्तओं बताइए ?
2. भाषा के अभ्यास का सिद्धान्त और स्वाभाविकता का सिद्धान्त सिद्धान्तओं बताइए?

1.3 सारांश

भाषा के विविध रूप देखे जा सकते है . वे स्वरूप विभिन्न क्षेत्रों में उसकीप्रोयोग से बनते है. जैसा कि समाज में भाषा, भाषा और लिंग , भाषा और अस्मिता, घर की भाषा बच्चे की भाषा स्कूल की भाषा, संविधान और और विभिन्न समय में बने ताराचन्द समिति – (1948), मुदलियार शिक्षा आयोग – (1952-53), कोठारी आयोग – (1964-66), सुनीति कुमार चटर्जी आयोग – 1956 आदि शिक्षा समितियों ने भाषा के बारे में अपना अपना मत दिए है., वर्तमान पाठ्यचर्या हिन्दी केलिए दो प्रकार स्थान दिख रहे है एक मातृभाषा में रूप दूसरा दूसरी भाषा के रूप में, अत हिन्दी भाषा शिक्षण के उद्देश्य, मातृभाषा शिक्षण उद्देश्य एवं दूसरी भाषा के रूप में हिन्दी शिक्षण की उद्देश्य के रूप में वांटे जा सकते है . भाषा शिक्षण के कई सिधान्त होसकते है जैसे कि अभ्यास का सिद्धान्त, स्वाभाविकता का सिद्धान्त, प्रभाव का सिद्धान्त, रुचि का सिद्धान्त, अभिप्रेरणा का सिद्धान्त,क्रियाशीलता का सिद्धान्त, जीवन समन्वय का सिद्धान्त एवं वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धान्‍त आदि।

1.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच –
उत्तर- अध्याय 4.2 देखे।

1.5 शब्दावली

शिक्षण सिद्धांत:

भाषा शिक्षण में बालक की रूचियों , प्रवृतियों, व्यक्तिगत भिन्नताओं, क्षमताओं अदि को ध्यान में रखते हुए शिक्षण सिद्धांत निर्धारित किये जाते है।

दूसरी भाषा:

शिक्षा व्यवस्था में मटरू भाषा को प्रथम स्थान दिया गयागाया एवं मातृ भाषा भिन्न अन्य भाषा को दूसरी भाषा के रूप में संबोधन किया गया है।

स्कूल की भाषा–

विद्यालयों में माधयमों के रूप में प्रयोग की जाने वाली

1.6 कार्य आवंटन

1) सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियोंका अर्थ स्पष्ट कीजिये।
2) सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विधियोंका अर्थ स्पष्ट कीजिये।

3) सामाजिक विज्ञान शिक्षण की विभिन्न विधियों में प्रभावी विधियों का वर्णन कीजिये।

1.7 क्रियाएँ

1) भाषा के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन कीजिये।
2) भाषा शिक्षण के विभिन्न सिधान्तों का वर्णन कीजिये।

1.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)

1) विभिन्न समितिओं का हिन्दी भाषा सम्बंधित भूमिका स्पष्ट कीजिये।
2) अहिन्दी भाषी तज्यों में हिन्दी भाषा की भूमिका स्पष्ट कीजिये।

1.9 संदर्भ पुस्तकें

- सक्सेना, राधारानी, (2013),“नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ”, जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- गुप्त, मनोरमा – भाषा अधिगम, केंद्रीय हिन्दी संस्थान,आगरा
- गुनानंद- हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास, विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा
- चतुर्वेदी आचार्य सीताराम- भाषा कि शिक्षा, हिन्दी साहित्य कुटीर, वाराणासी
- तिवारी, भोलानाथ –हिन्दी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद
- द्विवेदी, देवीशंकर – भाषा और भाषिकी, भाषा-विज्ञान-विभाग,सागर वि.वि , सागर
- पांडेय, रामाशकल –हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- चतुर्वेदी, शिखा – हिन्दी शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा शास्त्र की भूमिका
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा विज्ञानं की भूमिका,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

इकाई 2 : भाषा शिक्षण

भाषा का आधार, दार्शनिक आधार, मनोवैज्ञानिक आधार, सामाजिक आधार, भाषा शिक्षण की प्रचलित विधियाँ, व्याकरण-अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष विधि, ढांचागत विधि, संप्रेषणात्मक विधि, व्याख्यान विधि, भारत का बहुभाषिक परिदृश्य, भारत में भाषाएँ एवं भाषा परिवार एवं भाषा के बहुभाषिकता के आयाम आदि।

2.0 इकाई परिचय
2.1 शिक्षण के उद्देश्य
2.2 विषय विवेचन
2.2.1भाषा का आधार
        2.2.1.1दार्शनिक आधार
        2.2.1.2 मनोवैज्ञानिक आधार
        2.2.1.3 सामाजिक आधार
    2.2.2भाषा शिक्षण की प्रचलित विधियाँ
        2.2.2.1व्याकरण-अनुवाद विधि
        2.2.2.2 प्रत्यक्ष विधि
        2.2.2.3 ढांचागत विधि
        2.2.2.4 संप्रेषणात्मक विधि
        2.2.2.5 व्याख्यान विधि
    2.2.3 भारत का बहुभाषिक परिदृश्य
        2.2.3.1 भारत में भाषाएँ एवं भाषा परिवार
        2.2.3.2 भाषा के बहुभाषिकता के आयाम
2.3 सारांश
2.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर
2.5 शब्दावली
2.6 कार्य आवंटन
2.7 क्रियाएँ
2.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)
2.9 संदर्भ पुस्तकें

2.0 इकाई परिचय

भाषा कि एक विशेषता है की भाषा परिवर्तनशील प्रकृति के रूप में देखि जाती है.भाषा कि इस परिवर्तनशीलता के कुछ आधार होते है जैसे कि दार्शनिक आदिओं को एवं भाषा शिक्षण के व्याकरण-अनुवाद विधि, प्रत्यक्ष विधि, ढांचागत विधि,संप्रेषणात्मक विधिव्याख्यान विधि आदि भाषा शिक्षण की प्रचलित

विधियरों को तथा भारत एक बहुभाषित राष्ट्र है अत भारत का बहुभाषिक परिदृश्य भाषा परिवारिक के अनुसार भाषा के बहुभाषिकता के आयामों को इस इकाई में स्पष्ट किया गया है।

2.1 शिक्षण के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे :

i. भाषा के विभिन्न आधारों का ज्ञान प्राप्त करना।
ii. भाषा शिक्षण की प्रचलित विधियों का ज्ञान प्राप्त करना।
iii. भारत का बहुभाषिक परिदृश्य का ज्ञान प्राप्त करना।
iv. भाषा परिवार का ज्ञान प्राप्त करना
v. भाषा के बहुभाषिकता के आयाम का ज्ञान प्राप्त करना।

2.2 विषय विवेचन

2.2.1 भाषा का आधार

प्रस्ताबना

भाषा अभिव्यक्ति का साधन है। विचारों के सम्प्रेषण की प्रक्रिया इसी के द्वारा सम्पन्न होती है। अभिव्यक्ति के अभाव में व्यक्ति की समस्त व्यावहारिक चेष्टाएँ पंगु के सदृश है। भाषा द्वारा ही मनुष्य अपने संवेगों, विचारों, इच्छाओं को व्यक्त करता है, फिर चाहे वह अभिव्यक्ति मौखिक रूप से हो अथवा लिखित या सांकेतिक

भाषा अर्जन और अधिगम का दार्थनिक, सामाजिक और मनोविज्ञानिक आधार

भाषा की प्रकृति अनुकरसण प्रधान होती है। अपनी अनुकरण जन्य प्रवृत्ति के कारण ही बालक शैशवावसथा से ही अपने चतुर्दिक प्रमुख भाषा को सीखता, सुनता, समझता एवं व्हार में लाता है। इससे स्पष्ट है कि भाषा परम्परा से प्राप्त पैतृक संपत्ति नहीं है। आयुवृद्धि के साथ अनुकरण द्वारा वर्णन करता है। विचार विनिमय कि इस प्रक्रिया में आधारों की भूमिका दिखाई देती है। जैसे की दार्शनिकी, मानसिक सामाजिक इत्यादि।

2.2.1.1 दार्शनिक आधार

दार्शनिक आधार पर यदि विचार किया जाता है तो भाषा दैवप्रदत्त है यह माना जाता है। शब्द ही ब्रम्ह है जो कभी नष्ट नहीं होता है। जैसा कि मतृहरि अपने वाक्यपरीय ग्रन्थ में लिखते है नहीं होता। भाषा वे वाणी की उत्पत्ति मूलाधार चक्र से होती है एवं परा, पश्यन्ति, मध्यमा रुपों की अतिक्रान्त कर के वैखरी वाक श्रवण गोचर होता है। ध्वनि एवं शब्द का एक रूप स्वीकार कि वजह से शब्द को ब्रम्हतत्व स्वीकार किया जाता है। एवं जगत, प्रक्रिया में जीवन व्यवहार के लिए भिन्न-भिन्न अर्थ में परिवर्तित् होता है।

2.2.1.2 मनोवैज्ञानिक आधार

भाषा के मनोवैज्ञानिक आधार को मानसिक आधार को भी संज्ञा दी जा सकती है। जब की भावों एवं विचारों का सम्बन्ध मानसिक योग्यता एवं प्रक्रिया से है। भावों एवं विचारों का आदान प्रदान का माध्यम भाषा है जिसका सम्बन्ध मनोदशा से होता है। मन में उत्पन्न क्रिया तथा प्रतिक्रिया ध्वनियों के रूप में प्रगट होती है 'मन में जनम होती है। अर्थात् मस्तिष्क द्वारा विचारों की स्वीकृति प्राप्त करने लेने के पश्चात् ही वे अभिव्यक्ति का माध्यम बनते है। भाषा उत्तेजनात्प्रतिक्रिया-ध्वनियों की श्रृंखला है। वाणी के माध्यम से मानसिक ग्रन्थयों को दूसरे व्यक्तियों एवं मानसिक स्तर का बोध होता है। इसे ही भाषा मनौवैज्ञानिक आधार कहा जा सकता है।

2.2.1.3 सामाजिक आधार

भाषा एक क्रिया है क्योंकि सभी सामाजिक कार्यों तथा गतिविधियों में भाषा का ही उपयोग होता है। मानसिक सम्बन्धों का आधार भाषा ही होती है। अपनी राष्ट्रीय भाषा के व्यक्तियों से अपना पन का अनुभव करते है। सामाजिक रचना एवं समाज में रचना विनियम की आवश्यकर्ता ने भाषा जन्म दिया है यहि कारण है कि यही कारण है कि विभिन्न स्थानों क्षेत्रों एवं युओं में उत्पन्न भाषाओं में भिन्नता एवं विविधता पाई जाती है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. भाषा का सा दार्शनिक आधार को बताइए?
2. भाषा का सामाजिक आधार को बताइए ?

2.2.2 भाषा शिक्षण की प्रचलित विधियाँ

अध्ययन अध्यापन में विधियों का महत्वपूर्णता सदैव बरकार है। प्रत्येक विषय शिक्षण में अपने अपने विषय स्वरूप एवं प्रकृति के अनुसार विधियाँ निश्चित होती है। जैसे कि भाषा शिक्षण में कुछ विधियाँ महत्वपूर्ण मानी जाती है, वे निम्नर प्रकार है।

2.2.2.1व्याकरण-अनुवाद विधि

प्रत्येक भाषा का स्वत: का व्याकरण होता है। व्याकरण के आधार से ही एक भाषा से दूसरे भाषा में अनुवाद किये जाते है। जैसा कि हिन्दी भाषा से अन्य भाषा में एवं अन्य भाषा से हिन्दी भाषा में अनुवाद के लिए हिन्दी भाषा का व्याकरण ज्ञान होना अनिवार्य है। अत: इस विधि का उद्देश्य व्याकरण एवं अनुवाद सिखना है। इस विधि से भाषा में वियमानर नये शब्द, भाषा की संकल्पना, भाषा का स्वरूप भाषा की प्रकृति से छात्र परिचित होता है। इस से शब्दों के साथ साथ भाषा का अभ्यास किया जाता है। जिस से छात्र हिन्दी से दूसरे भाषा में, दूसरे भाषा से हिन्दी भाषा में अनुवाद करने में समर्थ होता है, और व्याकरण ज्ञान के साथ साथ अनुवाद कला में निपुण होता है।

वैशिष्टय

(1) अन्य भाषा से हिन्दी भाषा में अनुवाद किया जाता है।
(2) यहाँ शिक्षण का धरक शब्द ही होता है।
(3) व्याकरण का आधार से अन्य भाषा का सम्बन्ध स्पष्ट होता है।
(4) व्याकरण के आधार से भाषा के धरकों का वर्गीकरण किया जाता है।
(5) हिन्दी भाषा की व्याकरण संरचना अन्यभाषाओं की व्याकरण संरचना में तुलनात्मक अध्ययन होता है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. व्याकरण-अनुवाद विधि के स्वरूप को बताइए ?

………………………………………………………………………………………………
…………………………………………………………………………………….

2. व्याकरण-अनुवाद विधि के वैशिष्टय बताइए ?

………………………………………………………………………………………………
………………………………………………………………………………………………

2.2.2.2 प्रत्यक्ष विधि

प्रत्यक्ष विधि में किसी अन्य भाषा की सहायता बिना भाषा को सिखाया जाता है। अर्थात् किसी भाषा में उसी भाषा से सिखाने के प्रक्रिया को प्रत्यक्ष प्रणाली कहते है। अत: किसी भाषा को सिखने के लिए उसी भाषा में विचार करने योग्य वातावरण निर्माण करना इस पद्धति का मूल उद्देश्य है। विशिष्ट शब्दों का अर्थ समझने के लिए वस्तुओं का प्रदर्शन, भाव भुता अभिनय, पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग एवं व्याख्या आदिओं के द्वारा प्रयत्न किये जाते है। जैसे ‘‘आम’’ इस शब्द को समझाने के लिए आम-फल’’ दिखाकर अर्थ रूप बताया जाता है।

वैशिष्टय

1. अध्यापक केवल उसी (हिन्दी) भाषा का प्रयोग करता है।
2. छात्र-अध्यापकों के विय व्यास्परिक भाषिक व्यवहार हिन्दी भाषा में ही होता है।
3. ऐसे वातावरण में लेखन पठन में साथ साथ भाषा को समझने की एवं बोलने की सहल प्रवृत्ति निर्माण होता है।
4. इसमें अन्य भाषा की सहायता नहीं ही जाती है।
5. इस प्रणाली से शबद-अर्थो में सहल सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।

6. इस प्रणाली से अध्यापन रोचक होता है।
7. यह मनोवैज्ञानिक पद्धति है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1.प्रत्यक्ष विधिविधि के स्वरूप को बताइए ?
2. प्रत्यक्ष विधिविधि के वैशिष्टय बताइए?

2.2.2.3 ढांचागत विधि

किसी भी भाषा शिक्षण में केवल शब्द समृद्धि महत्वपूर्ण नहीं है अपितु शब्द योग्य प्रकार से वाक्यों में रचित होना आवश्यक है। अत: भाषा में तक वाक्य संरचना का अबगम नहीं होता है तब तक भाषा आती है ऐसा नहीं कहा जा सकता। इस पद्धति में वर्ण, वर्णों से पर पदों से पदों का निर्माण, पदों के ज्ञान से वाक्यों का निर्माण, वाक्य में पदों का सही क्रम निर्धारण, वाक्यों का निर्माण में कारकों का निधारण, एवं आसत्ति –योग्यता-आकाश आदि वाक्य विज्ञान का ज्ञान ही ढांचागत प्रणाली का उद्देश्य है।

वैशिष्टय

(1) इस पद्धति में हिन्दी भाषा में वाक्य रचना करने पर बल दिया जाता है।
(2) छात्र अपने शब्दों से वाक्य रचना करे ऐसी अपेक्षा रखी जाती है।
(3) छात्र कृति पर बल दिये जाते है।
(4) विभिन्न प्रकार की संरचानाओं का बार-बार अभ्यास किये जाते है।
(5) इस प्रणाली में लेखन व मौखिक उभय क्रियाओं को महत्व दिये जाते है।
(6) इस प्रणाली में दोषों को त्वरित निवारण किये जाते है।
(7) यह मनोविज्ञानिक प्रणाली है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1.ढांचागत विधि विधि के स्वरूप को बताइए ?
2. ढांचागत विधि के वैशिष्टय बताइए?

2.2.2.4 संप्रेषणात्मक विधि

किसी भी भाषा शिक्षण का उद्देश्य उसी भाषा में संप्रेषणात्मक क्षमता प्राप्त करना। इस प्रणाली में सामान्य जीवन गत व्यवहारों को शिष्य - चारों को उसी भाषा के सम्प्रेषण द्वारा सिखाए जाते है। यह प्रणाली प्रत्यक्ष प्रणाली के अनुरूप है। प्रणाली में प्रमुखत: मौखिक संप्रेषण को महत्व दिये जाते है, पश्चात् लेखन सम्प्रेषण को भी बताये जाते। छात्रों में भाषा की लेखननात्मक तथा भाषणात्मक सम्प्रेषण क्षमता उत्पन्न करना ही उद्देश्य है।

वैशिष्ट्य

(1) इस प्रणाली में समानय जीवन के साथ समन्वय'' सिद्धान्त को अपनाया जाता है।
(2) शिक्षक हिन्दी भाषा में ही संप्रेषण करता है।
(3) छात्रों की हिन्दी भाषा में ही सम्प्रेषण करने के लिए प्रेरित करता है।
(4) इस प्रणाली में शिक्षक विभिन्न विषयों को उसी भाषा के माध्यम से चर्चा करता है।
(5) शिल्सयार, वयवहार, संबोधन, पग लेखन के विभिन्न विधाओं को बताता है एवं छात्रों से उसी विधा से सम्प्रेषण करता है।
(6) इस प्रणाली में अभ्यास का अवसर अधिक होता है।
(7) यह प्रणाली मनोविज्ञानिक है।
(8) यह प्रणाली मनोविज्ञानिक है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1.संप्रेषणात्मक विधि के स्वरूप को बताइए ?
2. संप्रेषणात्मक विधि के वैशिष्ट्य बताइए?

2.2.2.5 व्याख्यान विधि

व्याख्यान विधि से छात्रों को अध्ययन में कोई असुविधा न होकर सुबोध तथा सुगम रूप से सीख सकता है। इस विधि द्वारा शिक्षक इकाई की संक्षिप्त रूपरेखा रख सकता है। सलग विवेचन के लिए व्याख्यान विधि उपयुक्त है। व्याख्यान देते समय तैयारी के साथ शिक्षक ने विषय के प्रति रूचि तथा उत्साह प्रदर्शित करना चाहिए। व्याख्यान के साथ -साथ अतिरिक्त स्रोत कैसे उपलब्ध होंगे, इसकी जानकारी छात्रों को देना जरुरी है। विषय स्पष्टीकरण के लिए यह विधि उपयुक्त है। छात्रों को सरल तथा सुबोध बनाने के लिए शिक्षक ने उचित प्रयास करना जरुरी है। छात्रों की समय बचत, स्वाध्ययन, नविन कार्य निर्धारण के लिए इस विधि का पर्याप्त उपयोग करना चाहिए। ऐतिहासिक विषय की प्रस्तावना तथा सारांश के लिए व्याख्यान विधि महत्वपूर्ण है।

वैशिष्ट्य

1. विषय स्पष्टीकरण के लिए यह विधि उपयुक्त है।
2. छात्रों की मानसिक क्रियाएँ होती है।
3. ऐतिहासिक भाषा साहित्य की प्रस्ताबना तथा सारांश के लिए महत्वपूर्ण है।
4. छात्रों को कुशल श्रोता बनाने में काफी हद तक प्रोत्साहित कर सकते है।
5. रेडियो, टेलीविजन का पर्याप्त लाभ उठा सकते है।
6. कुशल शिक्षक अल्प समय में पाठ्यक्रम पूरा कर सकते है।
7. यह पद्धति कम व्ययशील है।
8. श्रवण क्षमता, एकाग्रता, चिंतनशक्ति, तार्किक दृष्टिकोण, शैक्षिक कुशलता विकसित होती है।
9. समस्या का तत्काल समाधान संभव है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. व्याख्यान विधि विधि के स्वरूप को बताइए?
2. व्याख्यान विधि के वैशिष्ट्य बताइए?

2.2.3 भारत का बहुभाषिक परिदृश्य

2.2.3.1 भारत में भाषाएँ एवं भाषा परिवार

भारत एक बहुभाषि राष्ट्र है। भारत में प्रत्येक राज्यों में प्रायश: भिन्न भाषाएँ प्रचलित है, उनमें भी अपने –अपने में कई भेद पाए, जाते है। भारतीय भाषाओं की मूलभाषा संस्कृत मानि जाती है। संस्कृत युरो-भारतीय या यूरोपिय भाषा परिवार की भाषा है। संस्कृत का भारतीय भाषाओं के साथ-साथ विश्व के कई भाषाओं के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। भारोपीय भाषा परिवार को सतम एवे केंतुम ऐसे दो वर्गों में वाण्ध जाता है। संस्कृत केंतुम वर्ग का भाषा हैं, एवं संस्कृत भारतीय भाषाओं का मूल है। अधोलिखित रेखा चित्रों से और सपष्ट हो पाएगा।

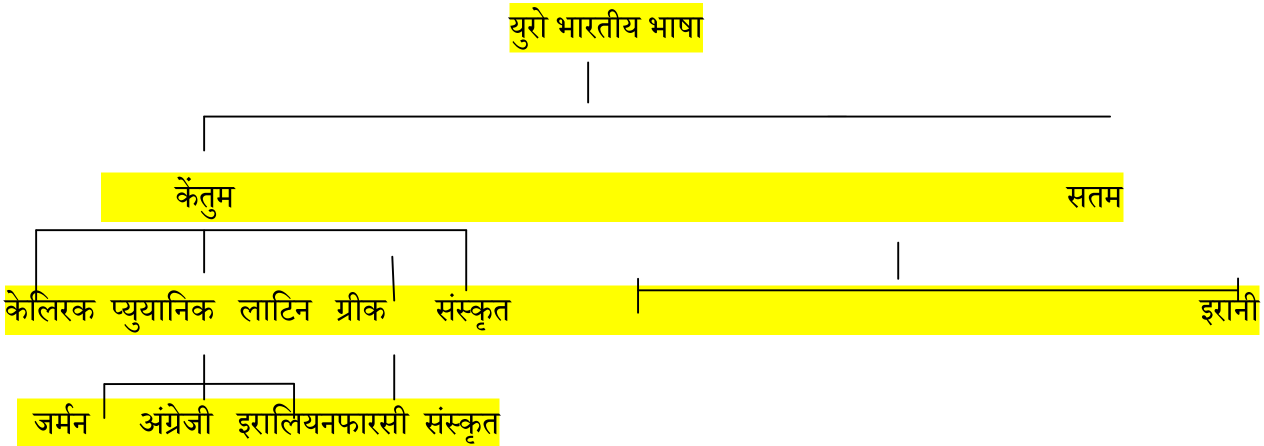

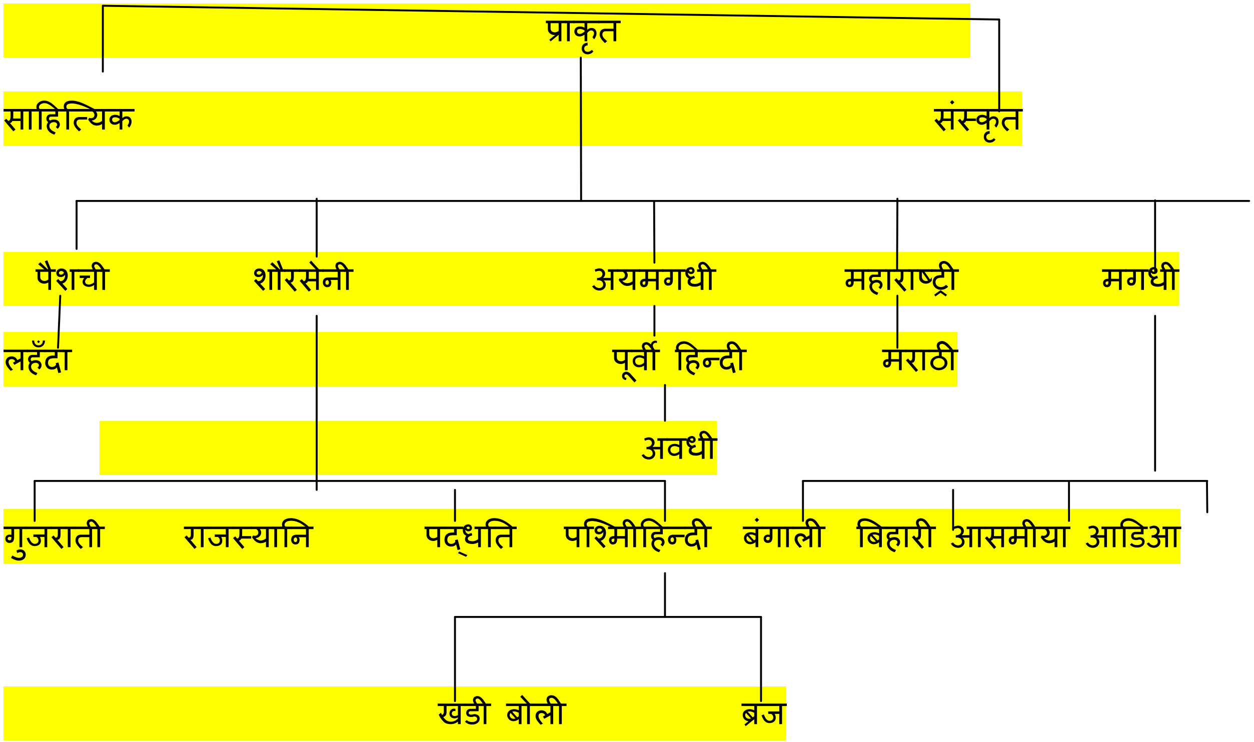
प्राकृत
साहित्यिक
संस्कृत
पैशची
शौरसेनी
अयमगधी
महाराष्ट्री
मगधी
लहँदा
पूर्वी हिन्दी
मराठी
अवधी
गुजराती
राजस्यानि
पद्धति
पश्मिीहिन्दी
बंगाली
बिहारी
आसमीया
आडिआ
खडी बोली
ब्रज

उपरोक्त चित्रों से ही भारत का बहुभाषी परिदृश्य स्पष्ट हो रहा है। रेखा चित्रों में प्रदर्शित भाषाओं से और कई भाषाएँ उत्पन्न हुई है। आज भारत में प्रचलित भाषाओं में अन्त: सम्बन्ध है। इन भाषाओं में हिन्दी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाष है। अत: भारत में इस बहुभाषिक परिदृश्य में हिन्दी का महत्वपूर्ण स्थान है।

2.2.3.2 भाषा के बहुभाषिकता के आयाम

भाषा अपने आप में कला भी है विज्ञान भी है। कला का आत्मसात होना बौदृिक पास का कार्य एवं विज्ञान का विश्लेषण के सारुत शिक्षण उपयोगी बनाना शास्त्रीय पस का कार्य। अत: इस को बौदृिक आगाम शिक्षण शास्त्रीय आगाम के रूप में बाण्ट के विचार निम्न में प्रस्तुत है।

बौधिक आयाम –

इस आगाम में भाषा को दो भागों में वाण्रा जा सकता है। शाब्रिक भाषा, अशास्टिक भाषा। शाष्टिक भाषा में अक्षर, शब्द, वाक्य एवं वाक्यों को विशिष्ट स्वरूप अनतर्भुल है। वाक्य का ही श्रवण, भाषण, पठन लेखन आदि कलाएँ होते है। अशाष्टिक भाषा में शरीरिक भाषा यानि सिधा –भाव मुख मुदाएँ एवं संकेत आदि अन्तनिहित होते। इन सब के अर्थ बुद्धि से ही लगाएँ जाते है।

भाषा का शिक्षण शास्त्रीय आयाम –

भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से हम सोचते है, किन्तु भाषा विज्ञान में हम भाषा का अध्ययन विश्लेषण करते है। अत: भाषा का शिक्षणशास्तीय विश्लेषण में भाषा को दो घटकों को वाक्य जाता है-

भाषा और भाषा साहित्य भाषा यानि भाषा का वैज्ञानिक पक्ष। जिसमें भाषा विज्ञान, व्याकरण, भाषा कौशल

आते है, जो भाषा का ज्ञानत्मक तथा क्रियात्मक, पक्ष है। भाषा साहित्य भाषा के कलात्मक पक्ष है। जिसमें गय, पद्य, नाटक, कथा, जी धनियाँ, निबन्ध, आत्म कयायें एवं सिखया जा सकता है। जिनकी वैज्ञानिक जा सकता है। अत: भाषा का शिक्षण शास्त्रीय आगाम भी महत्वपूर्ण है।

हिन्दी की भूमिका

इस बहुभाषिय एवं बहु-आयामिय परिदृश्य में हिन्दी भाषा सर्वथा समर्थ है। बहुभाषिय परिदृश्य में हिन्दी अपने आप में प्रतिनिधत्व करने वाली भाषा है, जो भाषाओं को एक सद्रामें बान्ध सकती है। जागमान्य व्याकरण संस्कृत व्याकरण एवं संस्कृत साहित्य से प्रभावित हिन्दी साहित्य एवं हिन्दी व्याकरण उन सब विधाओं में समर्थ है जो उपरोक्त आयामों में अपेक्षित है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. भाषा का शिक्षण शास्त्रीय आयाम को बताइए ?
2. युरो भारतीय भाषाओं को बताइए ?

2.3 सारांश

भाषा परम्परा से प्राप्त पैतृक संपत्ति नहीं है। आयुवृद्धि के साथ अनुकरण द्वारा अर्जन करता है। विचार विनिमय कि इस प्रक्रिया में दार्शनिकी, मानसिक सामाजिक इत्यादि आधारों की भूमिका दिखाई देती है। प्रत्येक भाषा शिक्षण में अपने अपने स्वरूप एवं प्रकृति के अनुसार विधियाँ निश्चित होती है।भाषा शिक्षण की भी कुछ प्रचलित विधियाँ है, वे व्याकरण-अनुवाद विधि,प्रत्यक्ष विधि,ढांचागत विधि, संप्रेषणात्मक विधि,व्याख्यान विधि आदि विधियाँ **है.**भारत एक बहुभाषि राष्ट्र है.इस बहुभाषिय एवं बहु-आयामिय परिदृश्य में हिन्दी भाषा सर्वथा समर्थ है.भारतीय भाषाओं की मूलभाषा संस्कृत मानि जाती है। संस्कृत युरो-भारतीय या यूरोपिय भाषा परिवार की भाषा है। संस्कृत का हिन्दी भाषा के साथ-साथ विश्व के कई भाषाओं के साथ प्रत्यक्ष सम्बन्ध है।

2.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच –

उत्तर- अध्याय 2.2 देखे।

2.5 शब्दावली

शिक्षण विधि :

“आव्यूहनियोजन तथा निर्देशन की वह कला अथवा विज्ञान है जिससे वृहत् सेनाओं के कार्य एवं गति संचालित होती है।”

- शब्दकोष

व्याख्यान विधि :

बड़ी कक्षाओं में प्रयोग की जाने वाले पद्धति व्याख्यान एक व्यावहारिक विधि है।”

- बाईनिंग एवं बाईनिंग

भाषा के आधार –

भाषा की व्यापकता के साथ साथ उसकी प्रकृति सम्बन्धी विविधता भी अधिक है। जिनके अनेक आधार है।

2.6 कार्य आवंटन

1) भाषा का आधारोंको स्पष्ट कीजिये।
2) भाषा शिक्षण की विधियोंका अर्थ स्पष्ट कीजिये।
3)भाषाशिक्षण की विभिन्न विधियों में प्रभावी विधियों का वर्णन कीजिये।

2.7 क्रियाएँ

1) भाषा शिक्षण की विधियों कीउपयोगिता का वर्णन कीजिये।
2) भारत का बहुभाषिक परिदृश्य को स्पष्ट कीजिये।

2.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)

1) यूरोपिय भाषा परिवार में हिन्दी की भूमिका स्पष्ट कीजिये।
2) भारत में भाषाएँ एवं भाषा परिवार के आधार से हिन्दी के महत्व स्पष्ट कीजिये।

2.9 संदर्भ पुस्तकें

- सक्सेना, राधारानी, (2013), “नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ”, जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- गुप्त, मनोरमा – भाषा अधिगम, केंद्रीय हिन्दी संस्थान,आगरा
- गुनानंद- हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास, विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा
- चतुर्वेदी आचार्य सीताराम- भाषा कि शिक्षा, हिन्दी साहित्य कुटीर, वाराणासी
- तिवारी, भोलानाथ –हिन्दी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद
- द्विवेदी, देवीशंकर – भाषा और भाषिकी, भाषा-विज्ञान-विभाग,सागर वि.वि , सागर
- पांडेय, रामाशकल –हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- चतुर्वेदी, शिखा – हिन्दी शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा शास्त्र की भूमिका
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा विज्ञानं की भूमिका,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

इकाई 3
भाषा कौशलें

श्रवणकौशल – श्रवण कौशल शिक्षण का महत्त्व : श्रवण कौशल शिक्षण के उद्देश्य श्रवण कौशल का विकास , मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का शिक्षण, मौखिक अभिव्यक्ति का अर्थ , मौखिक अभिव्यक्ति कौशल का महत्त्व, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल के उद्देश्य, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल की विकासक क्रियाएँ, मौखिक अभिव्यक्ति कौशल शिक्षण के विधियाँ, पठन कौशल,पठन कौशल का अर्थ, पठन कौशल शिक्षण का महत्त्व, पठन कौशल शिक्षण के उद्देश्य, पठन कौशल की विकासक क्रियाएँ, पठन कौशल शिक्षण के बिधियाँ, लेखन कौशल शिक्षण,लेखन शिक्षण का महत्व, लेखन शिक्षण के उद्देश्य लेखन कौशल की विकासक क्रियाएँ, लेखन कौशल शिक्षण विधियाँ।

इकाई रचना

3.0 इकाई परिचय
3.1 शिक्षण के उद्देश्य
3.2 विषय विवेचन
3.2.1श्रवणकौशल
    3.2.1.1 श्रवणकौशल अर्थ
    3.2.1.2 श्रवणकौशलशिक्षणकामहत्त्व
    3.2.1.3 श्रवणकौशलशिक्षणकेउद्देश्य
    3.2.1.4 श्रवणकौशलकीविकासक क्रियाएँ
    3.2.1.5 श्रवणकौशलशिक्षणकेबिधियाँ
3.2.2मौखिक अभिव्यक्तिकौशल का शिक्षण
    3.2.2.1मौखिक अभिव्यक्ति काअर्थ
    3.2.2.2 मौखिक अभिव्यक्तिकौशलकामहत्त्व
    3.2.2.3 मौखिक अभिव्यक्तिकौशलकेउद्देश्य
    3.2.2.4मौखिक अभिव्यक्तिकौशलकीविकासक क्रियाएँ
    3.2.2.5मौखिक अभिव्यक्तिकौशलशिक्षणकेबिधियाँ
3.2.3पठानकौशल
    3.2.3.1पठनकौशल का अर्थ
    3.2.3.2 पठनकौशलशिक्षणकामहत्त्व
    3.2.3.3 पठनकौशलशिक्षणकेउद्देश्य
    3.2.3.4पठनकौशलकीविकासक क्रियाएँ
    3.2.3.5पठनकौशलशिक्षणकेबिधियाँ
3.2.4लेखनकौशल
    3.2.4.1लेखनकौशल का अर्थ

3.2.4.2 लेखनकौशलशिक्षणकामहत्त्व
3.2.4.3 लेखनकौशलशिक्षणकेउद्देश्य
3.2.4.4 लेखनकौशलकीविकासक क्रियाएँ
3.2.4.5लेखनकौशलशिक्षणकेबिधियाँ
3.3 सारांश
3.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर
3.5 शब्दावली
3.6 कार्य आवंटन
3.7 क्रियाएँ
3.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)
3.9 संदर्भ पुस्तकें

3.0 इकाई परिचय

भाषा एक अभिव्यक्ति का साधन है। अभिव्यक्ति का माध्यम कौशल होते है। व्यक्ति कि सम्प्रेषण कि सक्षमता भकौशालों कीदक्षता पर ही निर्भर होती है। भाषा कौशलों के उपयोग में दो सम्प्रेषण प्रवाह क्रियाशील होते है यह सम्प्रेषण प्रवाह इस प्रकार है बोलना-सुनना सम्प्रेषण प्रवाह तथा लिखना-पढ़ना सम्प्रेषण प्रवाह। अतः इस इकाई में भाषा के मुख्य चार कौशलें तथा उनके महत्व, उद्देश्य एबम बिकासक क्रियाओं को ध्यान दिया गया है।

3.1 शिक्षण के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे :

vi. श्रवणकौशलकामहत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना।
vii. श्रवणकौशलकेउद्देश्य का ज्ञान प्राप्त करना।
viii. श्रवणकौशलकाविकासक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करना।
ix. वाचनकौशलकामहत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना।
x. वाचनकौशलकेउद्देश्य का ज्ञान प्राप्त करना।
xi. वाचनकौशलकाविकासक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करना
xii. पठनकौशलकामहत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना।
xiii. पठनकौशलकेउद्देश्य का ज्ञान प्राप्त करना।
xiv. पठनकौशलकाविकासक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करन
xv. लेखनकौशलकामहत्त्व का ज्ञान प्राप्त करना।
xvi. लेखनकौशलकेउद्देश्य का ज्ञान प्राप्त करना।
xvii. लेखनकौशलकाविकासक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करना

3.2 विषय विवेचन

3.2.1श्रवणकौशल

प्रस्ताबना

श्रवणकौशल (listening Skill)

वाचन सुनने और सुनकर उसका अर्थ एवं भाव समझने की क्रिया को श्रवण कौशल कहा जाता है। सामान्यत: जो ध्वनियाँ ग्रहण की जाती है और मस्तिष्क द्वारा उनकी अनुभूति तथा प्रत्यक्षीकरण को श्रवण कहते हैं। भाषा के सन्दर्भ में अर्थबोध एवं भाव की प्रतीति, सुनने के आवश्यक तत्व होते हैं। इस प्रकार जब कोई व्यक्ति हमारे सामने अपने भाव एवं विचार मौखिक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति करता हैं और हम उसे सुनकर यथा भाव एवं विचार समझते और ग्रहण करते हैं तो हमारी यह क्रिया सुनना अथवा श्रवण कहलाती है।

श्रवणकौशलशिक्षणकामहत्त्व:

1. श्रवण कौशल के शिक्षण द्वारा हिंदी की स्वर और व्यंजन ध्वनियाँ, ह्रस्व-दीर्घ, अल्पप्राण-महाप्राण, अघोष-सघोष, अनुस्वार-अनुनासिक, संयुक्त व्यंजन तथा विशेष समस्यात्मक ध्वनियों का उचित अभ्यास किया जा सकता है।
2. श्रवण कौशल के माध्यम से भाषा के अन्य कौशल जैसे उच्चारण कौशल, लेखन कौशल इत्यादि प्रभावित होता है अत: श्रवण कौशल शिक्षण अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

श्रवणकौशलशिक्षणकेउद्देश्य :

1. मौखिक भाषा सुनकर उसके अर्थ एवं भाव समझने की क्रिया में निपुण करना।
2. सुनने की क्षमता का विकास करना।
3. समस्यात्मक ध्वनियों का उचित अभ्यास कराना।
4. वाचक द्वारा अशुद्धत: उच्चरित ध्वनियों की त्रुटियाँ पकड़ने केलिये सक्षम बनाना।
5. भाषा के अन्य कौशल सीखने जैसे लेखन, वाचन, इत्यादि में निपुण करना।

श्रवण कौशल का विकासत्मक क्रियाएँ–

मौखिक भाषा सुनकर उसके अर्थ एवं भाव समझने केलिए आवश्यक है कि उनमें सुनने के आवश्यक तत्वोंका विकास किया जाय। यहकार्य एक-दोदिन, माह अथवा वर्षों में नही किया जा सकता, इस केलिए सतत प्रयास की आवश्यकता होती है। इस कौशल के विकास केलिए क्रियात्मक अभ्यास जैसे –सुनो और करो, सुनो और पहचानो, देखो और सुनो कराये जा सकते हैं।

श्रवण कौशल शिक्षण के विधियाँ

कहानी विधि –

इस विधि से बालक को मनोरंजनात्मक कथाएं अभिनय के साथ सुनाया जाता है श्रवण के साथ साथ उसका प्रतिक्रियाएं भी लिए जाते है।

श्रव्य उपकण प्रयोग विधि-

इस विधि में विभिन्न श्रव्य उपकरणों सुनने का अवसर प्रदान किये जाते है, जैसे रेडिओ, लिंग्वाफोन,टेप-रेकर्डर अदि।

श्रवण क्रीडा–

इस विधि सेश्राबना सम्बंधित खेल खेले जाते है, जैसे कान में कहना, केवल मुख उच्चार से शब्द पहचानना, कवा उड़ अदि

शुनो और करो विधि–

इस विधि में सुनना और समझना के बिच समन्वय स्थापना किया जाता है। बालक को विभिन्न क्रियाएँ शीघ्र शब्दों में कह क्र उस संबधित क्रियाएँ करने केलिए निर्देश दिए जाता है।

भाषाप्रयोगशाला विधि–

इस विधि बालक का श्रवण क्षमता विकास करने केलिए में भाषा प्रयोग शाला का प्रयोग किया जाता है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. श्रवणकौशलकाविकासत्मक क्रियाएँ बताइए?
2. श्रवणकौशलशिक्षणके विधियाँ बताइए?

3.2.2 मौखिक अभिव्यक्तिकौशल का शिक्षण

मौखिक अभिव्यक्ति का महत्व भाषा सिखने के लिए चार कौशल – सुनने, बोलना, पढ़ना तथा लिखने की आवश्यकता होती है। उस में द्वितीय कौशल को मौखिक अभिव्यक्ति का कौशल भी कहा जाताहै।मानव प्रधानतः अपनी अनुभूतियों तथा मनोभावों की अभिव्यक्ति उच्चारित अथवा मौखिक भाषा में ही करता है। लिखित भाषा गौण तथा उसकी प्रतिनिधि मात्र है, क्यूँ की भावों की अभिव्यक्ति का साधना साधारणतः सर्वप्रथमउच्चारित भाषा ही होती है। प्राणी जगत की यहाँ प्रवृति है की वह अपने भावों तथा उद्वेगों को दूसरे पर प्रकट करना चाहता है।, तथा दूसरों की प्रकृति,आदतें बिचारों को जानने को इच्छुक रहता है। अतः जीवन में प्रतिपल मौखिक अभिव्यक्ति की ही शरण लेना पड़ती है।मौखिक अभिव्यक्ति के द्वारा ही मानव जीवन के सम्पूर्ण क्रियाकलापों तथा भाषा के अंगा-उपनग का विवेचन हो जाता है , जैसे संवाद, अभिनय, भाषण, वादविवाद, अन्त्याक्षरी अदि।

1. बालक के व्यक्तित्वा के विकास मौखिक अभिव्यक्ति से ही प्राराम्भ्होता है।
2. मौखिक विचारों को समझाना एवं अभिव्यक्ति करना अधिक सरल देखा जाता है।
3. मौखिक अभिव्यक्ति लिखित की अपेक्षा अधिक सुविधा जनक एवं अभिव्यक्ति में सहज देखि जाती है।
4. मौखिक अभिव्यक्ति समाज के प्रत्येक वर्ग हेतु महत्वपूर्ण देखि जाती है।

5. मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा छात्रों की अनुकरण की प्रवृति को प्रोत्साहित किया जा सकता है।
6. मौखिक अभिव्यक्ति के अवसर भाषागत अशुद्धिओं को दूर करने में सहायक होते है।
7. मौखिक अभिव्यक्ति द्वारा हिव्यव्हार में कुशलता और उससे सामाजिक समायोजन में सहजता होती है।

मौखिक अभिव्यक्ति के उद्देश्य

मौखिक अभिव्यक्ति के महत्व के अधर पर पर इसके उद्देश्य निरधारण किया जा सकता है -

1. छात्रों में अपने भावों तथा विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की क्षमता विक्सित करना।
2. छात्रों में पूर्ण मनोयोग तथा शुधाच्चारण के साथ बोलने की क्षमता विक्सित करना।
3. छात्रों को नविन शब्दावलियों से परिचित करते हुए उन्हें व्यवहार में लेन के लिए प्रोत्साहित करना।
4. छात्रों में बड़ी एवं छोटी घतानेओं का विस्तार एवं संक्षेप करने की क्षमता का विकास करना।
5. छात्रों में उचित उतर-चढाव,से पूर्ण संभाषण करने की कला का विकास करना।
6. मौखिक प्रकासन के माध्यम से छात्रों में आत्मविकास की भाबना विक्सित करना।
7. चत्रिन को व्यवहार कुशल एवं समाज कुशल बनाना।
8. छात्रों को अपने दैनिक व्यव्हार में नविन शब्दों का प्रयोग करना सिखाना।

मौखिक अभिव्यक्ति के विकासक क्रियाएं

1. स्नेह, स्वीकृति, विश्वसा, प्रशंसा अदि क्रियाओं के द्वारा छात्रों के सुरक्षा-भबना कोको बनाये रखने के प्रयत्न करना
2. बालक के प्रश्नों को ध्यानपूर्वक सुनें तथा उसके समुचित उत्तर योग्य भाषा में दे। जिससे बालक का नए अनुभवों की प्राप्ति की आकांक्षा वरकरार रहेगी।
3. छात्रों में उतरदायित्व की भाबना का विकास करना।
4. बालक की मौखिक अभिव्यक्ति का कभी भी हंसी न उड़ना।
5. बालकों से मित्रवत व्यवहार करना जिससे उसको आत्मा प्रदर्शन करने में सहजता होगी
6. मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के दृष्टी से सामूहिक अनुकरण एवं क्रीडा आदियों का आयोजन करना।

मौखिक अभिव्यक्ति के शिक्षण बिधियाँ

वार्तालाप विधि–

इस बिधि से पठित बिषयों पर छोटे छोटे प्रश्नों को पूछते हुए वार्तालाप का अभ्यास कराया जाता है।

सुनना सुनवाना बिधि–

इस बिधि में छात्रों को मनोरंजक,शिक्षाप्रद तथा ग्यानावार्धक्काह्नी सुनकर या कभी कभी उनसे सुनते हुए भी मौखिक अभिव्यक्ति केम अवसर प्रदान किया जाता है।

कवित वाचन बिधि–

इस विधि मेंविभिन्न गिलों, क्रियात्मक गीतों एवं रोचक, मधुर कविताओं को सुनते हुए अथवा सुनते हुए छात्रों के मौखिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाता है।

अभिनय बिधि–

यहाँ अभिनय बिधि से छोटे छोटे नाटकों कमंचन किया जाता है।इससे छात्रों को आत्मा प्रकासन का अवसर मिलते हैं एवं चिंतन, मनन, कल्पना अदि शक्तियों का भी विकास किया जाता है।

प्रतियोगिता बिधि–

वाद-विवाद, भाषण, अन्त्याक्ष्यारी अदि प्रतियोगिताओं द्वारा मनोरंजन के साथ मौखिक अभिव्यक्ति का आवसर प्रदान किया जाता है।

परिचर्चा बिधि–

यहाँ अभिव्यक्ति का सामूहिक बिधि। इसमें किसी एक प्रश्न के उपर अनेक छात्र अपने अपने मत व्यक्त करते है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. मौखिक अभिव्यक्ति का महत्व बताइए?
2. मौखिक अभिव्यक्ति के शिक्षण बिधियाँ बताइए ?

3.2.4 पठनकौशल

पाठ कौशल

पठन कौशल सोद्देश्य और सार्थक चिंतन प्रक्रिया है। जैसे जैसे पाठक की दृष्टि शब्दों पर पढ़ती है। वह उन शब्दो को पढ़ते हूए चिहित अर्थ और भाष को ग्रहण करता जाता है पढ़ते समय व्यक्ति की अनुभूतियाँ जाग्रत होती है। वह पाठ्य वस्तु को पंसद करता है, नापंसद करता है तो कभी असहमत। वह विचारों को केवल ग्रहण ही नही करता उनकी सृष्टि भी करता है। लिपि प्रतीकों को पहचानते हूए ध्वनि प्रतिकों के साथ उनका संबंध जोडता है और उनसे बने हूए शब्दो, वाक्याशों और वाक्यों के द्वारा अभिव्यक्त अर्थ को ग्रहण करता है। यह पूरी प्रक्रिया पठन कहलाती है।

पठन कौशल का महत्व –

1. वाचन में साधारण रूप से पढ़ने की अपेक्षा शुद्धता, स्पष्टता तथा प्रभावोत्पकता अधिक होती है।
2. जीवन-चरित्र इतिहास, काव्य, कहानियाँ, लेख उपन्यास, नाटक इत्यादि साहित्य का पढ़कर आन्बन्द उठाया जा सकता है।
3. विद्वानों का कथन है कि मौखिक पठन से गद्य का आधा और पद्य का पूरा भाव समझ में आ जाता है।
4. कक्षा शिक्षण की दृष्टि से शिक्षक के आदर्श मौखिक पठन से कक्षा में जीवन बना रहता है।
5. मौन पठन से बालकों में स्वाध्याय करने की क्षमता विकसित होती है।

पठन कौशल के उद्देश्य

1. छात्रों को लिपी का स्पष्ट ज्ञान कराना।
2. छात्रों में शब्द यूक्ति भण्डार में वृद्धि करना।
3. छात्रों को वाक्य रचना का ज्ञान कराना।
4. छात्रों को विभिन्न लेखन शैलियों से परिचित कराना।
5. छात्रों को उचित आसन में उचित भाव मुद्रा के साथ पूर्ण मनोयोग से सस्वर पठन करने में प्रशिक्षित करना।
6. छात्रों को लिखित सामग्री का केंद्रिय भाव ग्रहण करने और समीक्षा करने में प्रशिक्षित करना।
7. छात्रों को कविता का भाव तथा छन्द के अनुसार उचित आरोह अवरोह के साथ पठन करने में प्रशिक्षित करना।
8. छात्रों की साहित्य अध्ययन में रूची उत्पन्न करना।
9. छात्रों में पठन सामूग्री का विश्लेषण कर उसके मूल्यांकन की रूची उत्पन्न करना।

पठन कौशल विकासात्मक कियाएँ

प्रस्तावना के माध्यम से बच्चों को विषय की ओर आकर्षित कर लिया जाएँ, तब वे स्व्यं ही सूनने, पठन और समझने का प्रयत्न करेंगे।

1. उचित पठन आसन एवं मुद्रा

अ. पठन बैठकर किया जाय।
आ. कुर्सीपर इस प्रकार बैठना चाहिए कि रीढ़ की हड्डी सीधी रहे और पैर 90 प्रतिशत का कोण बनाते हुए लटके रहे।
इ. कोण बनाते हुए लटके रहे।
ई. पाठ्य सामग्री आँखों में 35 से मी. की दुरी पर रहे।

2. शुद्ध शब्दो उच्चारण
   पठन कर्ता को सदैव शुद्ध उच्चारण के साथ पठन करना चाहिए।
3. बल : पठन करते समय आवश्यक शब्दों पर बल देना आवश्यक होता होता है। शिक्षक को आदर्श पाठ करते समय इस पर विशेष ध्यान देना चाहिए।
4. धैर्य : पठनकर्ता को सदैव धैर्य के साथ उचित गति में पठन करना चाहिए।

पठन कौशल के शिक्षण विधियाँ

बोलकर पढना–

इस विधि में छात्रों को बोलकर पढ़ने केलिए कहा जाता है। इस विधि में उचिल आवाज में विराम अदि चिन्हों को ध्यान रक्कते हुए पढने केलिए निर्देश दिया जाता है।

मौन पठान –

इस विधि में पुस्तक का पठान आवाज न करते हुए किया जाता है। परन्तु अर्थ अवगम के उपर मुख्या रूप से ध्यान दिया जाता है।

सामूहिक पठान –

इस विधि में किसी व्ही गद्यांश या पद्यांश को सामूहिक रूप से सामूहिक गति से पढाया जाता है।

अनुकरण पठन –

इस विधि में शिक्षक के द्वारा जैसा पढ़ा गयाचात्र के द्वारा वैसा हि गति, स्वर, लय विरामादी चिन्हों को ध्यान रखते हुए पढ़ा जाता है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. पठन कौशल के उद्देश्य बताइए?
2. पठन कौशल के शिक्षण विधियाँ बताइए?

3.2.2 लेखनकौशल

भाषा के दो रूप होते है – मौखिक और लिखित जब हम इन धोनियों को प्रतिक्कों के रूप में व्यक्त करते है और उन्हें लिपिबद्ध करके भाषा को स्थायित्व प्रदान करते है तो भाषा का यह लिखित रूप कहलाता है। भाषा के इस लिखित रूप कि शिक्षा, प्रतीकों को पहचान कर उन्हें बनाने कि क्रिया अथवा ध्योनी को लिपिबद्ध करना लिखना है। लिखित अभिव्यक्ति के अनेक रूप है जिनमें पत्र लिखेन, कहानी लेखन, प्रार्थना पत्र लेखन, निबन्ध-लेखन, जीवनचरित्र लेखन,अत्मकथालेखन कहानी लेखन संबाद लेखन प्रमुख है।लेखन के द्वारा अपनेभावों-विचारों या श्रुत-सामग्री को अपनी मातृभाषा के लिपिबद्ध चिन्हों द्वारा शुद्ध व लिखित रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता ही लेखन कौशल कहलाता है।

लेखनशिक्षणकामहत्व :

1. लिखित भाषा मानव के विचारों के आदान-प्रदान का मूल साधन है।
2. लिखित भाषा से मौखिक भाषा स्थायी हो जाती है।
3. विश्व का समस्त ज्ञान लिखित भाषा में ही सुरक्षित रहता है।
4. लेखन बौद्धि क विकास का सर्वोत्तम साधन है।
5. लिखित भाषा के अभाव मेंअपने अतीत को नही जाना जा सकता।

लेखनशिक्षणकेउद्देश्य :

- छात्रों को सुन्दर तथा स्पष्ट लेख लिखने का अभ्यास कराना।
- छात्रों को शुद्ध तथा व्याकरण संगत भाषा लिखने की शिक्षा देना।
- छात्रों को शीघ्र लिखने का अभ्यास कराना।
- छात्रों में सृजनात्मक योग्यता का विकास करना।
- छात्रों को प्रसंग, परिस्थिति व भावों के अनुरूप भाषा शैली का प्रयोग कर नेमें सक्षम बनाना।
- छात्रों को अपनी अभिव्यक्ति को तार्किक रूप से लिख कर व्यक्त करने में सक्षम बनाना।

लेखन कौशल की विकासक क्रियाएँ :

- बच्चों को अनुलेखन के अवसर दिए जाएँ।
- बच्चों को प्रतिलेखन के अवसर उपलब्ध करायें जाएँ।
- सुलेख पुस्तिकाएँ देकर अभ्यास कराया जाएँ।
- बच्चों से श्रुतलेख लिखवाया जाय।

- सुलेखप्रतियोगीताएँकराईजाएँ।

लेखन कौशल शिक्षण विधियाँ :

- **अनुलेखविधि**–
  इस विधोई में छात्र आदरह पुस्तकओं से अथवा शिक्षा का लेख से यथा वत लिखने का प्रयास करते है।

- **प्रतिलेखविधि**–
  इस विधि में छात्रों को पुस्तकों से देखकर लिखने केलिए दिया जाता है। इसमें छात्र पुस्तकों के गद्यांशो पद्यांशो को अपने लेखन पुस्तक में लिखता है।

- **श्रुतलेखविधि**–
  इस बिधि में छात्र शिक्षक का बोलने को सुन कर लिखता है। इससे छात्र का श्रवण एवं लेखन के मध्य समन्वय स्तापना की जाती है।

- **द्रुत लेख**–
  इस विधि में लेखन गति के वारे में ध्यान दिया जाता है। इस विधि में शिक्षक श्याम पट में जितना वेग से लिखता है छात्र उसका अनुकरण करते हुए उसी वेग में लिखते है, कभी कभी किसी गद्यान्शो को निर्दिष्ट समाया सीमा में लिखने केलिए भी दिया जाता है।

- **सुलेख** –
  सुलेख का अर्थ सुन्दर लेख अक्षरों को सुन्दर तथा सुदोल बनाने केलिए इस विधि का प्रयोग किया जाता है। इस विधि में सुन्दर अक्षर, शिरोरेखा एवं शुदा वर्तनी प्रयोग के लिये ध्यान दिए जाते है। इसमें सुलेख पुस्तिका एवं शिक्षक के सहायता से छात्र लेखन का अभ्यास करता है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. लेखन शिक्षण के उद्देश्य बताइए ?

2. लेखन कौशल शिक्षण विधियाँ बताइए ?

3.3 सारांश

भाषा कौशल भाषा का व्यावहारिक पक्ष है। भाषा सिखने के लिए चार कौशल – सुनने, बोलना, पढ़ना तथा लिखने की आवश्यकता होती है। जब कोई व्यक्ति हमारे सामने अपने भाव एवं विचार मौखिक भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति करता हैं और हम उसे सुनकर यथा भाव एवं विचार समझते और ग्रहण करते हैं तो हमारी यह क्रिया सुनना अथवाश्रवण कहलाती है।अपनी अनुभूतियों तथा मनोभावों की अभिव्यक्ति उच्चारित अथवा मौखिक भाषा में ही करता है। लिखित भाषा गौण तथा उसकी प्रतिनिधि मात्र है, क्यूँ की भावों की अभिव्यक्ति का साधन भाषा ही होती है। लिपि प्रतीकों को पहचानते हूए ध्वनि प्रतिकों के साथ उनका संबंध जोडता है और उनसे बने हूए शब्दो, वाक्यांशों और वाक्यों के व्दारा अभिव्यक्त अर्थ को ग्रहण करता है। यह पूरी प्रक्रिया पठन कहलाती है। लेखन के द्वारा अपने भावों-विचारों या श्रुत-सामग्री को अपनी मातृभाषा के लिपिबद्ध चिन्हों द्वारा शुद्ध व लिखित रूप में प्रस्तुत करने की क्षमता ही लेखन कौशल कहलाता है

3.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच –
उत्तर- अध्याय 3.2 देखे।

3.5 शब्दावली

शिक्षण विधि :

“आव्यूहनियोजन तथा निर्देशन की वह कला अथवा विज्ञान है जिससे वृहत् सेनाओं के कार्य एवं गति संचालित होती है।”

- शब्दकोष

अनुलेखविधि–

अनुलेख का आशय लेख का अनुकरण करता हुआ अभ्यास करना। शिक्षक के द्वारा अथवा आदर्ष पुस्तों के द्वारा दिए हुआ अंश का हु-बी-हु अनुकरण कने का प्रयास करना

अभिनयविधि

“अभिनय का अर्थ अतीत या वर्तमान की किसी स्थिति को क्रिया और जीवन देना है। इसका प्रयोग जिस विधि में किया जाता है, उस विधि को नाट्य रूपांतरण या भूमिका अभिनय विधि कहा जाता है।”

3.6 कार्य आवंटन

1) लेखन शिक्षण की विधियों को स्पष्ट कीजिये।
2) पठन कौशल विकासात्मक क्रियाएँ स्पष्ट कीजिये।

3.7 क्रियाएँ

1) श्रवण शिक्षण की विभिन्न विधियों की उपयोगिता का वर्णन कीजिये।
2) पठन शिक्षण की भाषा शिक्षण में भूमिका बताईये।

3.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)

1) मौखिक अभिव्यक्ति एवं पठन में अंतर बताईये।
2)भाषा शिक्षण में लेखन शिक्षण कि भूमिका स्पष्ट करें।

3.9 संदर्भ पुस्तकें

- सक्सेना, राधारानी, (2013),"नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- गुप्त, मनोरमा – भाषा अधिगम, केंद्रीय हिन्दी संस्थान,आगरा
- गुनानंद- हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास, विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा
- चतुर्वेदी आचार्य सीताराम- भाषा कि शिक्षा, हिन्दी साहित्य कुटीर, वाराणासी
- तिवारी, भोलानाथ –हिन्दी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद
- द्विवेदी, देवीशंकर – भाषा और भाषिकी, भाषा-विज्ञान-विभाग,सागर वि.वि , सागर
- पांडेय, रामाशकल –हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- चतुर्वेदी, शिखा – हिन्दी शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा शास्त्र की भूमिका
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा विज्ञानं की भूमिका,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

इकाई- 4

पाठ्यक्रम तथा पुस्तकें

पाठ्यक्रम, माध्यमित स्तर का पाठ्यक्रम, उच्च स्तर का पाठ्यक्रम, पाठ्य-पुस्तक तथा पूरक पुस्तके पाठ्य-पुस्तकों का महत्व, पाठ्य-पुस्तकों की विशेषताए, पाठ्य-पुस्तकों की समीक्षा, हिंदी में पाठ्य सहभागी क्रियाएँ, पाठ्यसहगामी क्रियाओं का महत्व, भाषा से सम्बन्धित पाठ् सहगामी क्रियाएँ, श्रव्य-दृश्य साधनों का तात्पर्य, श्रव्य–दृश्य साधनें

इकाई रचना

4.0 इकाई परिचय
4.1 शिक्षण के उद्देश्य
4.2 विषय विवेचन
    4.2.1 पाठ्यक्रम
        4.2.1.1 माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम
        4.2.1.2 उच्चस्तर का पाठ्यक्रम
        4.2.1.3 उच्चस्तर का पाठ्यक्रम
    4.2.2 पाठ्य-पुस्तक तथा पूरक पुस्तकें
        4.2.2.1 पाठ्य-पुस्तकों का महत्व
        4.2.2.2 पाठ्य-पुस्तकों की विशेषताएं
        4.2.2.3 पाठ्य-पुस्तकों की समीक्षा
    4.2.3 हिंदी में पाठ्य सहगामी क्रियाएं
        4.2.3.1 पाठ्यसहगामी क्रिया का अर्थ
        4.2.3.2 पाठ्यसहगामी क्रियाओं का महत्व
        4.2.3.3 भाषा से सम्बन्धित पाठ्य सहगामी क्रियाएं
    4.2.4 श्रव्य-दृश्य साधनें
        4.2.4.1 श्रव्य–दृश्य साधनों का तात्पर्य
        4.2.4.2 भाषा में श्रव्य-दृश्य साधनें
4.3 सारांश
4.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर
4.5 शब्दावली
4.6 कार्य आवंटन
4.7 क्रियाएं
4.8 प्रकरण अध्ययन
4.9 संदर्भ पुस्तकें

4.0 इकाई परिचय

पाठ्यक्रम शैक्षिक उद्देश्यों कीप्राप्ति का एक प्रभावी साधन है। शिक्षा पाठ्यक्रम पर अवलंबन होती है। अत इस अध्याय में विद्यार्थिओं की रूचि एवं योग्यता के अनुसार पाठ्यक्रम की एक संक्षिप्त रूपरेखा बनाया गया है। शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यपुस्तक का महत्व सर्व विदित है। अतः पाठ्यपुस्तक के साथ साथ पाठ्य-सहगामी क्रियाएवं दृश्य श्रव्य उपकरणों का भी प्रकार महत्व तथा विशेषताएँ भी वताया गया है।

4.1 शिक्षण के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे :

1. हिन्दी शिक्षण का पाठ्यक्रम का विभिन्न विधायों का ज्ञान प्राप्त करना।
2. पाठ्यपुस्तक के विभिन्न गुणों का ज्ञान प्राप्त करना।
3. हिन्दी शिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न पाठय-सहगामी क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त करना।
4. पाठ्यसहगामी क्रियाओं का महत्व का ज्ञान प्राप्त करना।
5. हिन्दी शिक्षण में प्रयुक्त विभिन्न श्रव्य-दृश्य साधनों का ज्ञान प्राप्त करना
6. हिन्दी शिक्षण में पाठ्यसहगामी क्रियाओं का महत्व का ज्ञान प्राप्त करना।

4.2 विषय विवेचन

4.2.1 पाठ्यक्रम

प्रस्तावना-

पाठयक्रम शिसाशास्त्र का बडा रोचक विषय है। पहले पाठयक्रम का संकुचित अर्थ लगाया जाता था अब पाठयक्रम में समस्थ अनुभवों को सम्मलित कर लेते है। छात्र कक्षा में या कक्षा से बाहर, विद्यालय की सीमा के अन्तर्गत किसी स्थल पर जो कुछ अनुभव करता है वह सब पाठयक्रम है। पाठयक्रम का एक आवश्यक पक्ष विभिन्न विषयोंका अध्ययन अध्यापन भी है। ज्ञान विज्ञान के अनेकानेक विषय है; सभी विषयों का अपना महत्व है। हाँ यह बात है की आवश्यकता के अनुसार अनिवार्य रूप से और कुछ को वैकल्पिक रूप से पढाना चाहते है। अतः पाठयक्रम में किसी भाषा को कैसा सीिन दिआजाये, पाठक्रम के स्तरोभेद में कैसा स्थान दिया जाए यह आलोचना आलोचना योग्य विषय है।

4.2.1.1 माध्यमिक **स्तर का** पाठयक्रम

माध्यमिक स्तर से हिंदी का स्थान प्रायतः दो प्रकार से देखे जाते है। एक मातृभाषा के रूप में दुसरा अन्यभाषा के रूप में। हिंदी भाषी प्रदेशों में मातृभाषा की दर्जा एवं अहिंदी–भाषा राज्यों में अन्य भाषा के रूप में दर्जा प्राप्त होति है। परन्तु सामान्यतः हिंदी

भाषा का माध्यमिक स्तर का पाठयक्रम का आलोचना करने पर आधोलिखित स्वरूप बन सकता है।

मौलिक तथा स्वतंत्र भाव प्रकाशन – काहानी कहना, स्पष्ट तथा शुद् भाव प्रकाशन, व्याकरण दृस्टि से शुद्ध उच्चारण तथा स्पष्ट

पठन– पाठ्य–पुस्तक पठन से आनंद अनुभूति, समझ तथा संसेपीकरण की परीक्षा

सहायक पुस्तक– पुस्तके प्रयोग की रूचि विकास, मौनवाचन से अर्थग्रहण

रचना– कल्पना सम्बन्धी निबंन्ध लेखन, शब्दों से कथा रचना साधारण पथ रचना

ग|पाठ– वृहत् गधांशों का छोटे–छोटे अंशों को पढना, उचित, स्वर लय, के साथ वाचन करना

प|पाठ– कविता का साभिन्नय आरोह अवरोह ढंग से वाचन एवं चरणों को काण्ठस्थि करना।

व्याकरण– पद वाक्यों के विश्लेषण, कारक एवं सभि अंगो का सम्यक ज्ञान।

4.2.1.2 उच्चस्तर का पाठ्यक्रम

उच्चस्तर में भाषा वैकल्पिक होति है। और प्रौढ सी होती है। अतः उच्चस्तर के पाठयक्रम को आलोचना करने से पाठयक्रम अधोलिखित प्रकार से बन सकता है।

मौखिक भाव प्राकाशन –व्याकरण दृष्टि से शुद्, प्रभावात्मक एवं रूचिकर भाषा व शैलि से अपने विचारों को व्यक्त कर सके।

पठन – स्पष्ट, प्रभावी विरामादि चिन्हों को ध्यान रखते हुए वाचन वाचन के साथ–साथ अर्थ ग्रहण की गति का विकास

रचना – वर्णनात्मक, विचारात्मक, कल्पनात्मक निबन्धों की रचना सभी प्रकार पत्र, विज्ञापन, संवाद लिखना

व्याकरण – रूप, काव्यरचना, अनुच्छेद रचना, पदनवाक्य विश्लेषण

समीक्षा – साहित्य की समीक्षा करने के सामान्य सिद्ान्त का ज्ञान प्राप्त। हिंदी साहित्य इतिहास से सामान्य परिच। कथनी उपकथनों का मूल्यांकण।

अपनी प्रगति की जाँच 1 –

1. पाठयक्रम **का अर्थ बताइए** ?

2. **हिन्दी शिक्षण के** उच्चस्तर के पाठयक्रम का **स्पष्ट करें** ?

4.2.2 पाठय–पुस्तक तथा पूरक पुस्तके

प्राचीन भारत में पाठ्य–पुस्तक के लिए ग्रन्थ शब्द का प्रचलन था। ग्रन्थ का अर्थ है– गूँथना, बाँधना, नियमित ढंग से जोड़ना क्रम से रखना आदि। भोज–पत्र या ताड़पत्र को आचार्य लोग अपने शिष्यों के समक्ष क्रम से रखते थे। उनमें बीच में छेद करके किसी धागे से गूँथ भी देते थे। इसीलिए उन्हें ग्रन्थ कहा कहा जाता था। अंग्रेजी का 'बुक' शब्द जर्मन भाषा के 'बीक' (beach) शब्द से व्युत्पन्न माना जाता है, जिसका अर्थ है– वृक्ष। फ्रांसीसी भाषा में भी इसका सम्बन्ध वृक्ष की छाल या तख्ती पर लिखने से है। पाठ्य–पुस्तकों की आवश्यकात साधन रूप में ही है, साध्य रूप में नहीं। पाठ्य–पुस्तकों को साध्य मान लेने से इनको रटना एवं सम्पूर्ण शिक्षा को किताबी बना देना महत्वपूर्ण हो जाता है, किन्तु पाठ्य–पुस्तकों का उद्देश्य रटना नहीं है। इनके **महत्व** निम्नलिखित है**।**

4.2.2.1 पाठ्य–पुस्तकों का महत्व

1. पाठ्य–पुस्तकों में अनेक प्रकार की सूचनाएँ एक ही स्थान पर मिल जाती है अतः सूचनाओं के संग्रह के लिए इनकी आवश्यकता है।
2. इनके प्रयोग से पाठ को पढ़ने और पढ़ाने में सहायता मिलती है।
3. पठित पाठ को पुनःस्मरण करने–कराने में ये सबल साधन है।
4. इनसे ज्ञानोपार्जन में सहायता प्राप्त होती है।
5. अध्यापक अपनी सुविधानुसार बालकों की योग्यता का ध्यान रखते हुए शिक्षा दे सकें, इसके लिए पाठ्य–पुस्तकों की आवश्यकता है।
6. छात्रों को गृह–कार्य देने में इनसे सुविधा होती है।
7. भाषा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने के लिए पाठ्य–पुस्तकों का होना अति आवश्यक है। इनकी आवश्यकता अध्यापक और छात्र, दोनों को है।
8. सम्पूर्ण कक्षा को एक साथ पढ़ाने में पाठ्य–पुस्तकें बड़ी उपयोगी होती है। इनकी सहायता से एक अध्यापक अनेक छात्रों को एक साथ सरलता से पढ़ा सकता हैफ। इससे समय और शक्ति का अपव्यय नहीं होता है।
9. बालकों की कल्पना–शक्ति को विकसित करता है।
10. उनके ज्ञान की सीमा को विस्तृत कराता है।
11. उनमें स्वाध्याय के प्रति रूचि को उत्पन्न करता है।

4.2.2 पाठ्य–पुस्तकों की विशेषताए

एक अच्छी पाठ्य–पुस्तको की कुछ विशेषताएँ होती हैं, वे ही विशेषताएँ उसके गुण का निर्धारण करती है। पाठ्य–पुस्तकों के गुण को हम मुख्य रूप से दो दृष्टियों से देख सकते है। इन्हें पुस्तकों के गुणों के दो रूप भी कहा जाता है। ये है –

1 आभ्यन्तरिक,

2 बाह्य।

आभ्यन्तरिक गुण पुस्तक के वे भीतरी गुण है जो उसकी भाषा, शैली, पाठ्य–विषय आदि की दृष्टि से होते है। बाह्य गुणों में पुस्तक का आवरण, मुद्रण, साज–सज्या आदि होते है।

पाठ्य–पुस्तकों के मुख्य गुण निम्नलिखित हैं –

1) **सोद्देयता** – प्रत्येक पाठ्य–पुस्तक की रचना कुछ उद्देश्यों को ध्यान में रखकर की जानी चाहिए। पुस्तक में इन उद्देश्यों को पूरा करने की प्रेरना वि|मान होनी चाहिए। भाषा की पाठ्य–पुस्तक का उद्देश्य–भूगोल और विज्ञान का ज्ञान देना नहीं होता। अतः ऐसे विषयों पर आधारित पाठों का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना न होकर भाषा–ज्ञान बढ़ाना है। अतः पाठों को भाषा–ज्ञान वृद्धि का उद्देश्य पूरा करना चाहिए।

2) **उपयुक्तता** – मनोवैज्ञानिक, दृष्टि से मानव–व्यक्तित्व के विकास की कई अवस्थाएँ है; जैसे –बाल्यवस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था आदि। इन अवस्थाओं की सामान्य प्रवृत्तियों के अनुकूल विषयों पर आधारित पाठ उपयुक्त होते है।

3) **विषय–विविधता** – एक ही प्रकार के विषय पर आधारित अनेक पाठों की अपेक्षा अनके विषयों पर आधिारित पाठ अच्छे होते है। इस प्रकार साहित्य की विभिन्न विधओं का पुस्तक में प्रतिनिधित्व होना चाहिए। गद्य, पद्य, नाटक कहानी, निबन्ध आदि सभी विषयों पर पाठ होने चाहिए।

4) **रोचकता** – जिन विषयों में छात्रों की रूचि होती है, उनके अध्ययन में वे ऊबते नहीं और उन्हें शीघ्र समझ लेते हैं! रूचि का सिद्धांत आज का एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है और इस सिद्धांत को शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में व्यवहृत किया जाना चाहिए।

5) **जीवन से सम्बद्धता**– पाठ्य–पुस्तक में आये हुए विषय जीवन से सम्बन्धित होने चाहिए। जीवन से असम्बद्ध विषयों को सीखने में छात्रों को कठिनाई होती है।

6) **क्रमबद्धता** – पाठ्य–पुस्तकों के पाठ क्रमबद्ध होने चाहिए। यह क्रम छात्रों की आयु के अनुसार होना चाहिए तथा विषयों को 'सरल से कठिन की ओर' के सिद्धांत के आधार पर व्यवस्थित करना चाहिए।

7) **आदर्शवादिता** – पाठ्य–पुस्तक में कुछ पाठ ऐसे हों जो वि|ार्थी को नया सन्देश, नयी प्रेरणा एवं नये आदर्श प्रदान करने में सक्षम हों।

8) **व्यावहारिक** – कुछ पाठ ऐसे भी होने चाहिए जो बालक की व्यावहारिक बुद्धि को विकसित कर सकें और उसे लोकाचार की शिक्षा दे सकें।

9) **स्तरानुकूलता** – पाठ्य–पुस्तकों की भाषा छात्रों के अनुकूल होनी चाहिए। प्रारम्भिक कक्षाओं में इनकी भाषा बहुत सरल हो और शनैःशनैः व्यवस्थानुसार भाषा के स्तर को बढ़ाया जाय।

10) **शुद्धता** – भाषा की दृष्टि से पाठ्–पुस्तको को शुद्ध होना चाहिए। यदि पुस्तक की ही भाषा अशुद्ध है तो यह आशा कैसे की जा सकती है कि छात्र उन्हें पढ़कर भाषा पर अधिकार कर सकेंगे।

11) **सार्थकता** – पाठ्–पुस्तक का प्रत्येक शब्द सार्थक हो, प्रत्येक वाक्य तथा प्रत्येक अनुच्छेद सार्थक हो। ऐसा न हो कि शब्द, वाक्य और अनुच्छेद अनावश्यक रूप से ठूँस दिये गये हों। अनावश्यक शब्दों या वाक्यों को पुस्तक में स्थान नहीं मिलना चाहिए।

12) **सुसम्बद्धता** – पुस्तक का प्रत्येक वाक्य दूसरे वाक्य से सम्बन्धित हो। एक अनुच्छेद का दूसरे अनुच्छेद से सम्बन्ध हो। एक अनुच्छेद के अन्दर विभिन्न वाक्य एक–दूसरे से सम्बद्ध होने चाहिए।

13) **भाषाधिकार वर्द्धकता** – पाठ्–पुस्तकों की भाषा ऐसी होनी चाहिए कि छात्रों के शब्द–भण्डार में वृद्धि और उनका भाषा पर अधिकार बढ़ सके।

14) **मौलिकता** – पाठ्य–पुस्तक के पाठों में मौलिकता को छिन्न–छिन्न नहीं किया जाना चाहिए। कभी–कभी अध्यापक संकलन करते समय लेखक के मूल लेख को छोटा कर देते हैं और लेख को इस प्रकार मौलिकता विहीन कर देते है, ऐसा नहीं होना चाहिए। जो पाठ नये लिखे जायें, उनमें ध्यान रहे कि अभिव्यक्ति की नवीनता बनी रहे।

15) **शैलीगत विविधता** – प्रत्येक पाठ्–पुस्तक में विभिन्न साहित्यिक विधाएँ तो होनी ही चाहिए, किन्तु उन पाठों में श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, भयानक, वीर, शान्त, आदि विविध रसों की कविताएँ हों और दोहा, चौपाई, कवित्त, सवैय, पद, तुकान्त–अतुकान्त आदि विविध छनद हों।

16) **नाम** – पाठ्य–पुस्तक के बाह्य गुणों में नाम का भी प्रभाव पड़ता है। पुस्तक का नाम सरल, संक्षिप्त स्पष्ट एवं आकर्षक हो। उससे विषय का भी किंचित् आभास मिल जाना चाहिए।

17) **आकार** – पाठ्य–पुस्तक में पाठों का आकार बहुत छोटा या बड़ा न रहे। इस प्रकार सम्पूर्ण पुस्तक का आकार भी न बहुत छोटा रहे, न बड़ा। छोटी कक्षाओं में पृष्ठ संख्या कम रहे, किन्तु बड़ी कक्षाओं में यह संख्या धीरे–धीरे बढ़ती जाय।

18) **कागज** – कागज बहुत पतला न हो और ऐसा न हो जिसकी चमक आँखों पर पड़े। यह इतना पुराना भी न हो कि शीघ्र फट जाय और छात्र को वर्ष में दो बार नई किताब खरीदनी पडे। छोटी कक्षाओं में बड़े आकार के कागज की पाठ्य–पुस्तक हो सकती है।

19) **मुद्रण** – पुस्तक की छपाई शुद्ध होनी चाहिए। अक्षर बहुत छोटे न हों। प्रारम्भिक कक्षाओं में मोटे अक्षरों में छपाई हो और धीरे–धीरे ऊपर की कक्षाओं में अक्षर बारीक हो सकते है। अभ्यासार्थ दिये प्रश्नों के अक्षर मूल पाठ के अक्षर से भिन्न हों। शीर्षकों के लिए लिए भी अलग टाइप के अक्षर हों। शब्दों के बीच की दूरी एक वाक्य से दूसरे वाक्य की दूरी, अनुच्छेद–योजना आदि पर भी ध्यान रहे।

20) **चित्र** – चित्रों से विषय स्पष्ट हो जाते हैं। पुस्तक की उपयोगिता में वृद्धि के लिए चित्र होने चाहिए। प्रारम्भिक कक्षाओं की पाठ्–पुस्तकों में चित्र अवश्य हों। धीरे–धींरे ऊँची

कक्षाओं में इन चित्रों की कमी होती जाय और उच्च कक्षाओं में इन चित्रों की विशेष आवश्यकता नहीं।

21) **जिल्द** – पाठ्य–पुस्तकों की जिल्द मजबूत होनी चाहिए। छोटी कक्षाओं में छात्र किताबें बहुत फाड़ते हैं और दुभार्ग्यवश आजकल उन्हीं की जिल्द सबसे कमजोर होती है।

22) **आवरण** – पाठ्य–पुस्तक का आवरण आकर्षक होना चाहिए। छोटे बालक रंग–बिरंगे चित्रों को बहुत पसन्द करते हैं! अतः उनकी पुस्तकों के आवरणों में विभिन्न चित्र हों तो अच्छा है। ऊँची कक्षाओं की पुस्तकों के आवरण सादे, किन्तु कलात्मक हों।

23) **मूल्य** – पाठ्य–पुस्तक का मूल्य उचित होना चाहिए जिससे कि छात्र उसे सरलता से खरीद सकें और अभिभावकों पर अधिक भार न पड़े।

उपर्युक्त गुणों में प्रथम पन्द्रह गुण पाठ्य–पुस्तकों के आभ्यन्तरिक गुण हैं। इनमें भी निम्नलिखित प्रकार के गुणों का उल्लेख किया गया है –

(अ) विषय–वस्तु की दृष्टि से आभ्यन्तरिक गुण। क्रम संख्या 1 से 8 तक वर्णित गुण इसी प्रकार हैं।

(ब) भाषा की दृष्टि से आभ्यन्तरिक गुण। क्रम संख्या 9 से 13 तक वर्णित गुण इसी प्रकार हैं।

(स)शैली की दृष्टि से आभ्यन्तारिक गुण। चौदहवें और पन्द्रहवें गुण इसी प्रकार के हैं। पाठ्य–पुस्तकों के बाह्य गुणों में क्रम संख्या 16 से क्रम संख्या 23 तक गुणों की चर्चा की गई है।

4.2.2.3 पाठ्य–पुस्तकों की समीक्षा

पाठ्य–पुस्तकें दो प्रकार की होती हैं –

(1) सूक्ष्म अध्ययनार्थ पुस्तकें,

सूक्ष्म – अध्ययन वाली पुस्तकों का अध्ययन बड़ी गम्भीरता से किया जाता है। इनका उद्देश्य बालकों के शब्द–भण्डार में बृद्धि करना, उनका भाषा–ज्ञान बढ़ाना उनके सूक्ति–भण्डार या लोकोक्ति–भण्डार में वृद्धि करना एवं प्रसंगों को भली–भाँति स्पष्ट करना है। इन पुस्तकों को ही साधारणतया पाठ्य–पुस्तकें कहा जाता है। इन्हें गहन अध्ययन की पुस्तकें भी कहते हैं। इनके अध्ययन से छात्रों के ज्ञान में वृद्धि होती है और वे लेखक या कवि के विचारों से परिचय प्राप्त कर लेते हैं।

विस्तृत अध्ययनार्थ पुस्तकें विस्तृत अध्ययन के लिए सहायक पुस्तकों का प्रयोग दुत पाठ के लिए होता है। इसमें सीखी हुई शब्दावली का ही प्रयोग किया जाता है। इनका उद्देश्य बालकों को द्रुत गति से पढ़ने का अभ्यास कराना है। छात्र शीघ्र गति से पुस्तक को पढ़कर भी उसका अर्थ समझ लें, यही इस पुस्तक का उद्देश्य होता है। शब्दार्थ को स्पष्ट करना एवं व्याख्या करना इन पुस्तकों के शिक्षण का उद्देश्य नहीं होता। कहीं–कहीं आवश्यकात पड़ने पर ही शब्दकोष की सहायता लेनी पड़गी।

प्रचलित पाठ्य–पुस्तकें

पाठ्य–पुस्तकों के गुण–दोषों के आधार पर यदि वर्तमान काल में प्रचलित पाठ्य–पुस्तकों की समीक्षा की जाय तो शायद ही कोई पुस्तक सफल सिद्ध हो। गुणों की कसौटी पर कसने पर अधिकांश पाठ्–पुस्तकें खरी नहीं उतरती। इन पाठों का संकंलन बहुधा बिना किसी नियम या क्रम के होता है। कक्षा के स्तर को ध्यान में रखकर बहुत कम पाठ लिखे या संकलित किये जाते हैं।

कक्षा 9 में ही जयशंकर प्रसाद की रचना 'बीती विभावरी जाग री' का रखना, सुमित्रानन्दन पंत रचित परिवर्तन को स्थान देना उपयुक्त नहीं कहा जा सकता। ग| की पुस्तक में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी कृत साहित्य की महत्ता' शीर्षक लेख हाईस्कूल कक्षाओं के अनुकूल नहीं कहा जा सकता। तुलसी की रचनाओं में अनेक सुन्दर स्थल है किन्तु प्रायः धनुष्य–यज्ञ ले लिया जाता है जो छात्रों को तुलसी–साहित्य का ज्ञान कराने में असमर्थ रहता है।

अपनी प्रगति की जाँच 1 –

1. पाठ्यपुस्तक के गुण बताइए ?
2. पाठ्यपुस्तक के महत्व बताइए ?

4.2.3 हिंदी में पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

यह सर्वविदित है कि आज सहगामी क्रियाएँ पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार कर ली गई हैं। इसलिए प्रत्येक विषय के शिक्षक का यह प्रयास होना चाहिए कि वह विषयगत जानकारी देते हुए यदा–कदा सहगामी क्रियाओं का सहारा लेते हुए विषय को और रूचिपूर्ण बनाये। सहगामी क्रियाओं द्वारा न केवल शैक्षिक, सामाजिक, मानोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की ही पूर्ति नहीं होती वरन् इनके द्वारा नैतिकता का मार्ग प्रदर्शित करते हुए उनमें विविध रुचियों का विकास भी किया जा सकता है।

हिंदी भाषा एक ऐसा विषय है जिससे अधिकाधिक सहगामी क्रियाएँ सम्बद्ध देखी जाती हैं, क्योंकि सहगामी क्रियाओं की सूची में सबसे अधिक साहित्यिक क्रियाएँ वि|ालयों में सम्पन्न होतीं हैं। साहित्यिक क्रियाओं के अंतर्गत भाषण, वाद–विवाद, कविता पाठ, अन्त्याक्षरी, नाटक, कवि जयंती, कवि सम्मेलन, कवि–समादर, कहानी प्रतियोगिता, कवि गाष्टी इत्यादि क्रियाएँ आतीं हैं।

4.2.3.1 पाठ्यसहगामी क्रिया का अर्थ

इन क्रियाओं द्वारा जहाँ एक ओर छात्रों का मनोरंजन करते हुए शिक्षण की यांत्रिकता को दूर करने में सहायता मिलती है, वहीं दूसरी ओर छात्रों के भाषागत ज्ञान एवं कौशल का भी विकास सम्भव होता है। भाषा के बहुत से उद्देश्यों की पूर्ति भी इनके द्वारा सम्भव देखी जाती है। विशेष रूप से छात्रों को आत्माभिव्यक्ति के अवसर प्राप्त होते हैं। उनमें आत्मविश्वास का संचार होता है तथा शुद्धोच्चारण के साथ कथन कह सकने की कला का निरन्तर परिमार्जन होता है। साहित्यक क्रियाओं का संचालन करते हुए छात्रों की साहित्य के प्रति रुचि भी बढ़ायी जा सकती है।

4.2.3.2 पाठ्यसहगामी क्रियाओं का महत्व छात्रों को आत्माभिव्यक्ति अथवा विचाराभिव्यक्ति के अधिकाधिक अवसर प्रदान करते हुए वाचन कला में कुशल बनाना।

1. छात्रों में आत्म प्रकाशन के माध्यम से आत्मविश्वास विकसित करना।
2. छात्रों की साहित्य के प्रति रुचि जागृत करते हुए उनका ज्ञानवर्धन करना।
3. सहगामी क्रियाओं के माध्यम से शिक्षण की यांत्रिकता को समाप्त कर उसमें नयापन लाना।
4. छात्रों में विविध क्रियाओं के माध्यम से मानवीय गुणों का विकास करना यथा सहयोगी भावना, भाईचारे की भावना, दया, साहिष्णुता के भाव आदि।
5. छात्रों को अवकाश काल के सदुपयोग हेतु जानकारी देना।
6. छात्रों में सृजनात्मक कौशल विकसित करते हुए उनमें उचित कूलयांकन कर सकने की क्षमता का विकास करना।
7. छात्रों में नेतृत्व की क्षमता विकसित करना।
8. छात्रों को समय एवं श्रम के महत्व से परिचित कराना।
9. स्हगामी क्रियाओं के माध्यम से छात्रों के व्यक्तितत्व का सर्वांगीण विकास करना।

4.2.3.3 भाषा से सम्बन्धित पाठ्य सहगामी क्रियाएँ

भाषा से सम्बन्धित पाठ्य साहगामी क्रियाओं में सांस्कृतिक एंव साहित्यिक दोनों प्रकार की क्रियाओं रखा जाता है। यहाँ पर कुछ ऐसी सहगामी क्रियाओं की चर्चा की जा रही है, जिनका आयोजन हमारे अधिकांश विद्यालयों में किया जाता है–

1.वाद–विवाद – वाद–विवाद प्रतियोगिता का प्रचलन परम्परा से देखा जा सक शिक्षा व्यवस्था में भी वाद–विवाद शिक्षण की एक प्रणाली के रूप में प्रचलन में था। इस प्रतियोगिता में छात्र अभीष्ट विषय के सम्बन्ध में अपने विचार पक्ष और विपक्ष के रूप में व्यक्त करते हैं। वाद–विवाद में उन्हें अपने विचारों को रखने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है

किन्तु इसमें प्रत्येक प्रतिभागी छात्रों के लिए बोलने अथवा विचारों को प्रस्तुत करने का एक निश्चित समय निर्धारित रहता है। उस निश्चित निर्धारित समय में ही उसे अपने विचारों को तार्किक रूप में प्रस्तुत करना होता है। प्रतियोगिता के रूप में सम्पन्न कराये जाने के कारण छात्रों में प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होता है, व पूरी निष्ठा, परिश्रम एवं हाव–भाव पूर्ण शैली के साथ अपने वक्तव्य को तैयार करते है। प्रतियोगिता में विजित छात्र को वि|ालय द्वारा पुरस्कृत भी किया जाता है। वि|ालय में यदा–कदा अथवा महीने में एक बार इस प्रतियोगिता का आयोजन अवश्य कराया जाना चाहिए। विशेषकर भाषायी ज्ञानवर्धन की दृष्टि से यह बहुत ही लाभप्रद देखी जाती है।

2.भाषान प्रतियोगिता – इसे भी साहित्यिक प्रतियोगिता के अंतर्गत रखा जाता है। इसका भी प्रचलन प्राचीन समय से देखा जा सकता है। इस प्रतियोगिता का आयोजन भी करते हुए छात्रों का ज्ञानवर्धन किया जा सकता है। शिक्षक को चाहिए कि प्रारम्भिक स्तर से ही छात्रों को भाषण की कला में कुशल बनाये। इसके द्वारा छात्रों को न केवल आत्माभिव्यक्ति के अवसर ही सुलभ होंगे वरन् उनमें आत्मविश्वास भी जागृत होगा। भाषण प्रतियोगिता में सफल प्रतिभागी छात्रों को पुरस्कृत भी किया जाना चाहिए जिससे अन्य छात्र भी उसकी सफलता से प्रेरित हों।

3.अन्त्याक्षरी – अन्त्याक्षरी जैसा कि इसके नाम से स्पष्ट है, अन्तिम अक्षर, से प्रारम्भ जाने वाली यह प्रतियोगिता बहुत ही रोचक एवं मनोरंजक मानी जाती है। अन्य प्रतियोगिताओं की तुलना में छात्र इसमें विशेष रुचि लेते हैं। हिंदी भाषा के ज्ञानवर्धन की दृष्टि से ये अत्यन्त उपयोगी देखी जाती है। इसमें सभी छात्रों को क्रमशः भाग लेने का अवसर भी प्राप्त होता है। यह प्रतियोगिता एक ही कक्षा में छात्रों को दो दलों में विभक्त करके सत्पन्न करायी जाती है। इसके अतिरिक्त दो अलग–अलग कक्षाओं के मध्य, दो विद्यालयों के मध्य, इसी प्रकार आगे बढ़ते हुए राज्य स्तर तक सम्पन्न करायी जा सकती है। यह एक प्रकार की सामूहिक रूप की प्रतियोगिता है। इसमें प्रतिभागी दो दलों में विभक्त हो जाते हैं। प्रथम दल का एक सदस्य किसी पद्य अथवा कविता, दोहा आदि को सुनाता है तथा दूसरे दल के सदस्य को छोड़े गये अन्तिम अक्षर से पुनःप्रारम्भ करते हुए कविता सुनानी होती है, इस प्रकार दोनों दलों के बीच यह क्रम तब तक चलता रहता है जब तक कोई दल अन्तिम अक्षर से कविता बोलने में असमर्थ न हो जाये। विजयी दल को पुरस्कृत किया जाता है।

अन्त्याक्षरी को बहुत ही उत्साहवर्धक प्रतियोगिता के रूप में माना जाता है। इसमें प्रतियोगिता के अंत तक छात्रों में उत्साह बना रहता है। प्रतियोगिता में भाग लेने के उत्साह से छात्र कविताओं, गीतों, श्लोंकों एंव दोहो आदि को सरलता से कंठाग्र भी कर लेते हैं। शुद्धच्चोरण के साथ–साथ छात्रों में सुन्दर ढंग से उचित उतार–चढ़ाव के साथ वाचन करने की कला का भी विकास होता है।

4.अनुवाद प्रतियोगिता – प्रतियोगिताओं की श्रृंखला में आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं में अनुवाद प्रतियोगिता भी प्रमुख है। अनुवाद का आशय है कि भाषा में व्यक्त विचारों को उसी रूप में दूसरी भाषा की समृद्धि हेतु आवश्यक है कि अन्य भाषाओं की पुस्तकों एवं ग्रंथों का हिंदी में अनुवाद किया जाये। यह प्रतियोगिता प्राथमिक'' एवं माध्यमिक स्तरों के लिए उचित नहीं है क्योंकि उनका भाषा पर पूर्ण अधिकार नहीं होता, किन्तु उच्च माध्यमिक स्तरों के विद्यार्थियों में इस प्रकार की प्रतियोगिता आयोजित करते हुए अनुवाद कला की क्षमता को प्रोत्साहित किया जा सकता है। इससे छात्रों में अन्य भाषाओं के ज्ञान की वृद्धि के साथ–साथ आलोचनात्मक दृष्टिकोण का विकास भी सम्भव देखा जा सकेगा।

5.कवि जयंती – अवसरानुकूल कवि जयंती या लेखक जयंती का आयोजन करने से छात्रों की साहित्य के प्रति रुचि विकसित की जा सकती है। इसे प्रतियोगिता के रूप में सम्पन्न नहीं किया जाता वरन् किसी विशीष्ट कवि अथवा लेखक की काव्यगत विशेषताओं, रचनाओं को उनकी विशिष्ट तिथिनुसार छात्रों, शिक्षकों एवं आमंत्रित विद्वानों द्वारा स्मरण किया जाता है। भाषा के अतिरिक्त अन्य छात्र भी इससे विशेष लाविन्वित होते हैं। इस दिशा में कुछ कवियों की जयंतियाँ विद्यालय में साहित्यिक क्रियाओं के रूप में आयोजित की जाती हैं, जैसे– तुलसी जयंती, कबीर जयंती, वाल्मीकी जयंती, भारतेन्दु दिवस इत्यादि।

6.कवि सम्मेलन – छात्रों को साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करने एवं उनमें रचनात्मक क्षमता का विकास करने के उद्देश्य से कवि सम्मेलन को उपयोगी पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अंतर्गत माना जाता है। इसमें छात्रों को उत्कृष्ट कवियों अथवा रचनाकारों की रचनाएँ सुनाने का अवसर प्राप्त होता है। इस सहगामी क्रिया का संचालन पूरी तैयारी के साथ एक बड़े आयोजन के रूप में किया जाता है, इसलिए विद्यालयों द्वारा साल में एक बार या दो बार ही सम्पन्न कराया जाना संभव हो पाता है, किन्तु विद्यालय के वार्षिकोत्सव के समय कवि सम्मेलन का आयोजन कराया जा सकता है।

7.साहित्य परिषद् – भाषा के क्षेत्र में साहित्य परिषद् का स्वरुप प्राचीन काल से देखा जा सकता है वैदिक काल की शिक्षा व्यवस्था में 'साहित्य परिषद्' का उल्लेख मिलता है। इस परिषद का प्रमुख उद्देश्य साहित्यिक ज्ञान की वृद्धि करना होता है, अतएव वि|ालयों में इस परिषद् की सीापना स्थायी रूप अवश्य करायी जानी चाहिए। वे ही छात्र और शिक्षक इसके सदस्य होने चाहिए जो वास्तव में साहित्य में रुचि रखते हैं। इस साहित्य परिषद् की एक कार्यकारिणी समिति भी होनी चाहिए जो वर्ष भर में किये जाने वाले कार्य{मों की योजना बनाने तथा उनके क्रियान्वयन को मूर्त रूप दे। आज अन्य विषयों में भी साहित्य परिषद् का रूप देखा जा सकता है जैसे– कला परिषद, संगीत परिषद, नाटय परिषद इत्यादि।

8.विद्यालय पत्रिका – विद्यालय पत्रिका द्वारा भी छात्रों में साहित्यिक रुचि का विकास किया जा सकता है। विद्यालय पत्रिका किसी विद्यालय की क्रियाकलापों की प्रतिबिम्ब स्वरूप होती है। इसमें विद्यालयों के वर्ष भर में संचालित किये जाने वाले कार्य{मों के वर्णन के साथ–साथ छात्रों एवं शिक्षकों के लेख, कविता, संस्मरण, चुटकुलों, कहानियाँ, प्रहसन आदि भी प्रकाशित कियो जाते हैं। छात्रों की सुजनात्मक कुशलता का अनुमान इसके आधार पर लगाया जा सकता है। इसके माध्यम से उनकी प्रतिभा को निखरने का अवसर प्राप्त होता है। कई विद्यालयों में प्रकाशित उत्कृष्ट रचनाओं को पुरस्कृत किया जाता है, जिससे छात्र प्रोत्साहित होते है। आज प्रत्येक आदर्श विद्यालय से यह अपेक्षा की जाती है कि वे विद्यालय पत्रिका के माध्यम से न केवल अपने विद्यालय के गौरव को ही बढ़ाये वरन् हिंदी भाषा साहित्य के संरक्षण, संवर्धन में भी योगदान दे।

10.सरस्वती यात्राएँ – वर्ष में एक बार सरस्वती यात्राओं का अयोजन करते हुए भी छात्रों की साहित्य के प्रति रुचि बढ़ायी जा सकती है। प्रत्येक विद्यालय में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अंतर्गत इसका विशेष महत्व माना जाता है। ये यात्राएँ विद्यालयों द्वारा ही संचालित की जाती है। ये छात्रों के लिए मात्र मनोरंजनप्रद ही नही होती वरन् इनके माध्यम से छात्रों में अनेक गुणों का विकास भी देखा जाता है, जैसे – सृजनात्मकता, मिलजुल कर कार्य करने की भावना, उत्तरदायित्व की भावना इत्यादि।

उपरोक्त पाठ्य सहगामी क्रियाओं के अतिरिक्त कुछ अन्य ऐसी क्रियाएँ है जिनके लिए किसी विशेष आयोजन की आवश्यकता नहीं पड़ती तथा महीने में एक या दो बार अथवा सप्ताह के अन्तिम दिन शनिवार को सम्पन्न करायी जा सकती हैं– जैसे लघु नाटक का मंचन, भाषा से सम्बन्धित पोस्टर अथवा चार्ट प्रतियोगिता, कहानी प्रतियोगिता, कविता पाठ, फ्लैश कार्ड तैयार करने से सम्बन्धित प्रतियोगिता, मूक अभिनय इत्यादि।

अपनी प्रगति की जाँच 1 –

1. पाठ्यसहगामी क्रियाओं **का महत्व**?
2. पाठ्यसहगामी क्रिया **का अर्थ बताइए** ?

4.2.4 श्रव्य–दृश्य साधनें

जिन सामग्रियों के प्रयोग से छात्र सुनकर मन में शब्द–चित्र का निर्माण करता है और दुरूह सलि को समझता है, उन उपकरणों को श्रव्य उपरकण कहा जाता है।

4.2.4.1 श्रव्य–दृश्य साधनों का तात्पर्य

भाषा – शिक्षण के समय कुछ कठिन शब्दों या सीलों का स्पष्टीकरण करने के लिए मौखिक उदाहरणों की सहायता ली जाती है। मौखिक रूप से शब्द–चित्र प्रस्तुत करने वाले साधनों को मौखिक उदाहरण कहा जाता है।

कुछ साधन दृश्य होते हैं। इन साधनों को देखकर शब्द, अर्थ या भाव को समझाा जाता है। श्रव्य उपकरणों में श्रवणेन्द्रिय का प्रयोग है तो दृश्य उपकरणों को साक्षात् चक्षुओं से देखा जाता है। कुछ उपकरण ऐसे होते हैं, जो श्रव्य–दृश्य दोनों होते हैं। ऐसे उपकरण बहुत कम है। श्यामपट, चार्ट पोस्टर आदि दृश्य उपकरण हैं। रेडियो, ग्रामोफोन आदि श्रव्य उपकरण है। टेलीविजन, अभिनय आदि कुछ श्रव्य–दृश्य दोनों है। किन्तु श्रव्य–दृश्य उपकरण नाम व्यापक है और केवल श्रव्य या केवल दृश्य को भी सामान्यत श्रव्य–दृश्य उपकरण कह दिया जाता है। अतः भाषा– शिक्षण में इनके प्रयोग की चर्चा करते समय सूक्ष्म भेद को ध्यान में नहीं रखा जायगा।

4.2.4.2 भाषा में श्रव्य-दृश्य साधनें

चित्र – पाठ को आकर्षक व रोचक बनाने के लिए अध्यापक चित्र गा प्रयोग कर सकता है। रेखाओं और रंगों का यह वह संयोग जो अपनी मूक भाषा में किसी तथ्य, भाव योजना की अभिव्यक्ति करे, चित्र कहलाता है। यह आँखों को सौन्दर्य प्रदान करता है। चित्र में वस्तुओं का चित्रण रहता है। कला का प्रदर्शन, मनोरंजन, भावभिव्यक्ति, सौन्दर्याभिव्यक्ति, मूल, वर्णन सूचना, ज्ञान, शिक्षा, धार्मिक भावना, अध्यात्मवाद, मत प्रचार आदि इसके अनेक उद्देश्य हैं। साधारण तस्वीरों और शैक्षिक चित्रों में अन्तर होता है। शैक्षिक चित्र केवल मनोरंजन कौतूहल, आनन्द या सौन्दर्य के लिए न होकर अनुभव, भाव, तथ्य, ज्ञान एवं शिक्षा प्रदान करने के लिए होते हैं।

पाठ्य – पुस्तकों में भी चित्र होते हैं, किंतु वे चित्र छोटे होते हैं। शिक्षण के लिए बाहर से बड़े चित्र ले जाने पड़ते हैं। ये सस्ते एवं सुलभ होने चाहिए। महापुरुषों के चित्र, स्थान के चित्र या युद्ध–वर्णन अथवा सभा–सम्मेलनों के चित्र भाषा–शिक्षण में सरलता से प्रयुक्त हो सकते हैं। एक पररियड में अनेक चित्रों की अपेक्षा एक या दो चित्र ही प्रयुक्त करने चाहिए। प्रत्येक चित्र सोद्देश्य हो और उन पर आवश्यक प्रश्न किये जाने चाहिए। चित्र को ऐसी जगह टाँगना चाहिए, जहाँ से वह सभी बालकों को सरलता से दिखाई पड़े। चित्र स्पष्ट होना चाहिए। इनमें कलात्मकता, स्पष्टता, प्रभाविता, शुद्धता, विश्वसनीयता, सत्यता एवं पूर्णता होनी चाहिए। इसे मनोरंजक, आकर्षक, उत्तेजक एवं व्यवहारिक होना चाहिए। इसका आकार इतना बड़ा हो कि पूरी कक्षा देख सके।

रेखाचित्र – वस्तु प्रतिमूर्ति या किसी अन्य साधन के अभाव में अध्यापक कभी–कभी रेखाचित्र का सहारा लेता हैं। रेखाचित्र उध्यापक द्वारा कुछ रेखाओं के माध्यम से भाव की मूक अभिव्यक्ति है। श्यामपट पर चॉक के सहारे अध्यापक रेखाचित्र खींचकर पाठ को रोचक बना देता है। विभिन्न रेखाओं, कोणों घुमावों आदि को श्यामपट पर पढ़ाते समय

बनाना स्वाभाविक भी है और सरल भी है। मण्डलाकार, उच्चासन आदि शब्दों का स्पष्टीकरण रेखाचित्र द्वारा किया जा सकता है।

मानचित्र – मानचित्र का सर्वाधिक प्रयोग इतिहास–भूगोल की कक्षाओं में होता है, किंतु भाषा के पाठों में कुछ इतिहासिक या भौगोलिक तथ्यों व प्रसंगों को स्पष्ट करने के लिए मानचित्र का प्रयोग किया जा सकता है। नालन्दा, ओदन्तपुरी, विक्रमशिला, हिमगिरि, गोदावरी, केरल, नागालैण्ड जैसे पाठों को मानचित्र की सहायता से पढ़ाना सरल हो जाता है।

खादी बोर्ड – एक बड़े तख्ते पर फलालेन या खादी कपड़ा या ऊनी कपड़ा तानकर चिपका दिया जाता है और इस बोर्ड को फलालेन बोर्ड या खादी बोर्ड कहते है। इसमें चॉक से कुछ लिखा नहीं जाता वरन् कुछ चित्रों या चिन्हों की कटिंग चिपकाई जाती है। पाठ से सम्बन्धित चित्रों को विभिन्न पोस्टरों, पुस्तकों, पत्रिकाओं या समाचार–पत्रों से काट लिया जाता है और उनके पीछे रेगमाल कागज लगा दिया जाता है। अब इन चित्रों को खादी बोर्ड पर चिपकाने पर ये चिपक जाते है और आवश्यकतानुसार निकाले जा सकते है। इन चित्रों या आकृतियों के पीछे अपनी जानकारी के लिए क्रम संख्या लिख दी जाती है जिससे कहानी का विकास करने में चित्रों को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया जा सके। प्रारम्भिक स्तर पर वर्णमाला सिखाने में, संयुक्ताक्षरों का ज्ञान कराने एवं माध्यमिक स्तर पर निबन्ध या कहानी का विकास करने में खादी बोर्ड का विकास किया जा सकता है।

लिंग्वाफोन तथा ग्रामोफोन – श्रव्य उपकरणों में ग्रामोफोन का अपना महत्व है। ये उपकरण रिकार्डो की सहायता से बालकों का मनोरंजन करते हैं और शिक्षा भी देते हैं। मसाले के बने गोल तवे पर रेखाओं के रूप में ध्वनि भर ली जाती है और तब लिंग्वाफोन की सहायता से पाठ सुना दिये जाते हैं। ग्रामोफोन की सहायता से कविता, एकांकी संवाद आदि की शिक्षा रोचक ढंग से दी जा सकती है। कविता का वाचन वार्तालाप, संवाद एवं भाषण की शैलियों का ज्ञान इसके द्वारा सरलता से हो सकता है। ग्रामोफोन के रिकार्ड स्थायी होते हैं। अब बने–बनाये रिकार्ड बाजार से प्राप्त हो सकते हैं। सस्वर वाचन , शब्द–उच्चारण, आदर्श वाचन आदि का अभ्यास इनके द्वारा सरलता से किया जा सकता है।

रेडियो – रेडियो का प्रयोग अब भारतीय परिवार में भी बढ़ता जा रहा है। शिक्षालयों में यह साधन यदि सुलभ है तो इसके कार्यक्रमों की पहले से जानकारी प्राप्त करके भाषा–शिक्षण में इसका उपयोग किया जा सकता है। भारत के प्रत्येक विद्यालय में सभी विद्वान या भाषाविद् नहीं जा सकते। भाषा–विशेषज्ञ आकाशवाणी द्वारा अपने वक्तव्य प्रसारित करते रहते है। इन वार्ताओं को सुनकर छात्र अपना साहित्यिक ज्ञान बढ़ा सकते है। ग्रामीण विद्यालयों में अभी भी यह साधन सुलभ नहीं है। रेडियो–कार्य{मों को और अधिक शैक्षिक बनाने की आवश्यकता है।

टेपरिकार्डर – यह ऐसा यन्त्र है जो बिजली या बैटरी की सहायता से टेप पर पहले से संग्रहीत ध्वनि को प्रसारित करता है। ग्रामोफोन के रिकार्ड स्थायी होते है, किन्तु टेपरिकार्डर के टेप अस्थायी होते है। ये तार या फीते वाले रिकार्ड होते है और इन्हें जब चाहें तब समाप्त कर इन पर दूसरे रिकार्ड भर लें। वक्तव्य, भाषण, कविता, गीत, वार्तालाप आदि को टेप करके विद्वानों के स्वर हम बार–बार सुन सकते हैं। यह रेडियो से कहीं अधिक प्रभावी एवं महत्वपूर्ण साधन है क्योंकि इसमें समय का बन्धन नहीं होता।

अभिनय – वि|ालय में विशष रूप से कभी–कभी नाटकों का आयोजन होता है। वार्षिकोत्सव, सम्मेलन या किसी विशेष दिन के आयोजन में आगन्तुकों के मनोरंजनार्थ नाटक अभिनीत किये जाते हैं। हिंदी–शिक्षण की दृष्टि से अभिनय महत्वपूर्ण है। अभिनय को देखकर एवं पात्रों के मुख से स्पष्ट एवं उचित आरोहावरोह युक्त वाणी को सुनकर छात्र भाषा का उचित प्रयोग सीखते हैं।अभिनय श्रव्य–दृश्य साधन है जिसे देखा और सुना जाता है। अभिनय के माध्यम से बालक को स्वाभाविक गति से बोलने की आदत पड़ जाती है। वह शब्दों एवं वाक्यों को सजीव ढंग से बोलना सीख जाता है।

चलचित्र – चलचित्र आज मनोरंजन का सर्वप्रथम साधन बन गया है। पश्चिमी देशों में पाठ्य–वस्तु को स्पष्ट करने के लिए चलचित्रों का खूब प्रयोग होने लगा है। साहित्य में वर्णित विभिन्न प्रकार के काल्पनिक दृश्यों को वर्णन द्वारा स्पष्ट किया जाता है, किन्तु इन दृश्य को फिल्मों में फोटोग्राफी की कला द्वारा सरलता से प्रदर्शित किया जा सकता है। नवीन खोजों के परिणामस्वरूप आज फोटोग्राफी की कला में बहुत विकास हो गया है और सूक्ष्म अंगों का दिखाया जाना सम्भव हो गया है।

आज सिनेमा के प्रति लोगों की अच्छी धारणा नहीं है, क्योंकि भारत में प्रचलित फिल्में बड़ी घटिया किस्म की हैं, किन्तु इनमें सुधार किया जा सकता है और महान पुरुषों के जीवन से चुनकर अच्छे साधन प्रस्तुत किये जा सकते है। भारत में शैक्षिक चलचित्र बहुत कम बनते हैं। दूसरी बात यह भी है कि यह साधन व्ययसाध्य है। कभी–कभी इस साधन का सुलभ होना कठिन है। विद्यालय में प्रोजेक्टर की व्यवस्था नहीं होती और कोई अच्छा अँधेरा कमरा या हॉल नहीं होता। अतः यह भाषा–शिक्षण में प्रयुक्त नहीं किया जा सकता।

टेलीविजन – रेडियो का अत्यन्त विकसित रूप टेलीविजन है जिसमें ध्वनि के साथ–साथ चित्र भी आते हैं। टेलीविजन केन्द्र में अध्यापक भाषा की शिक्षा देकर दूर–दूर तक बैठे श्रोता दर्शकों को भाषा सिखा सकता है। यह श्रव्य–दृश्य साधन है क्योंकि इसमें हम बोलने वाले को देख भी सकते है। कान और आँख दोनों इन्द्रियों के प्रयोग के कारण यह साधन अधिक प्रभावशाली है। रेडियो सेट के साथ एक छोटे आकार का रजतपट लगा रहता है जिसमें सहस्त्रों किलोमीटर दूरी पर बैठे हुए व्यक्ति को कविता सुनाते हुए, भाषण देते हुए, वार्तालाप करते हुए देखा जा सकता है। रेडियो और चलचित्र दोनों के लाभ इससे मिल सकते हैं।

क्रम संख्या एक से दस तक के साधन केवल दृश्य साधन हैं। क्रम संख्या 11,12 और 13 के साधन केवल श्रव्य साधन हैं और बाद के तीन साधन श्रव्य–दृश्य दोनों ळें

अपनी प्रगति की जाँच 1 –

1. भाषा शिक्षण में श्रव्य—दृश्य साधनें स्पष्ट करें ?
2. श्रव्य-दृश्य साधनों का तात्पर्य क्या है बताइए ?

4.3 सारांश

छात्र कक्षा में या कक्षा से बाहर, विद्यालय की सीमा के अन्तर्गत किसी स्थल पर जो कुछ अनुभव करता है वह सब पाठयक्रम है। में विद्यार्थियों की रूचि एवं योग्यता के अनुसार पाठ़यक्रम को विभिन्न भागों में बंटा जा सकता है। पाठ्य–पुस्तकों की आवश्यकात साधन रूप में ही है, साध्य रूप में नही। गृह–कार्य देने, कल्पना–शक्ति का विकास करने आदि विभिन्न कार्यों को पाठ्यपुस्तक से साधित कर सकते है। एक अच्छी पाठ्य–पुस्तको की कुछ विशेषताएँ होती हैं, वे ही विशेषताएँ उसके गुण का निर्धारण करती है। वे गुण आभ्यन्तरिक और बाह्य के रूप में दो भाग कर सकते है। आभ्यन्तरिक गुण पुस्तक के वे भीतरी गुण है जो उसकी भाषा, शैली, पाठ्य–विषय आदि की दृष्टि से होते है। बाह्य गुणों में पुस्तक का आवरण, मुद्रण, साज–सज्या आदि होते है। हिंदी भाषा एक ऐसा विषय है जिससे अधिकाधिक सहगामी क्रियाओं का सम्बद्ध देखी जाती हैं, क्योंकि सहगामी क्रियाओं की सूची में सबसे अधिक साहित्यिक क्रियाएँ विद्यालयों में सम्पन्न होती हैं। साहित्यिक क्रियाओं के अंतर्गत भाषण, वाद–विवाद, कविता पाठ, अन्त्याक्षरी, नाटक, कवि जयंती, कवि सम्मेलन, कवि–समादर, कहानी प्रतियोगिता, कवि गाष्टी इत्यादि क्रियाएँ आती हैं।

5.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच –

उत्तर- अध्याय 5.2 देखे

5.5 शब्दावली

शिक्षण विधि

”आव्यूह नियोजन तथा निर्देशन की वह कला अथवा विज्ञान है जिससे वृहत् सेनाओं के कार्य एवं गति संचालित होती है।“

- शब्दकोष

पाठ्यपुस्तक विधि

”पाठ्यपुस्तक विधि शिक्षण की वह प्रक्रिया है ,जिसका तत्कालीन उद्देश्य पाठ्यपुस्तक में निहित सूचनाओं की समझदारी प्रदान करना होता है।“

- वेस्ले ई. बी.

व्याख्यान विधि

बड़ी कक्षाओं में प्रयोग की जाने वाले पद्धति व्याख्यान एक व्यावहारिक विधि है।”

- बाईनिंग एवं बाईनिंग

नाट्य रूपांतरण विधि

“अभिनय का अर्थ अतीत या वर्तमान की किसी स्थिति को क्रिया और जीवन देना है। इसका प्रयोग जिस विधि में किया जाता है ,उस विधि को नाट्य रूपांतरण या भूमिका अभिनय विधि कहा जाता है।”

समसामयिक घटनाएँ

“इस पद के अंतर्गत घटनाएँ तथा विचार्य विषय या मुद्दे दोनों ही आते है और यह क्षेत्र में एन दोनों को एकाकी रूप में रखने पर अधिक व्यापक है। आधुनीक घटना वह है जो घटित हो चुकी है। यह महत्वपूर्ण हो सकती है और महत्वहीन भी।”

- जेरोलिमेक

पाठ्यसहगामी गतिविधियां

“छात्रों में शास्त्रीय दृष्टिकोण विकसीत करने के लिए विभिन्न गतिविधियोंका आयोजन किया जाता है , इस गतिविधियों कों पाठ्यसहगामी गतिविधियाँ कहते है।”

4.6 कार्य आवंटन

(1हिन्दी शिक्षण का विभिन्न स्तरों का पाठ्यक्रम स्पष्ट कीजिये।
(2 हिंदी शिक्षण के माध्यमिक स्तर का पाठ्यक्रम को समीक्षा कीजिए।

4.7 क्रियाएँ

(1हिन्दी शिक्षण में दृश्य-श्रव्य उपकरणों की उपयोगिता का वर्णन कीजिये।

(2विभिन्न पाठ्य सहगामी गतिविधियों की हिन्दी शिक्षण में भूमिका बताईये।

4.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)

(1पाठ्यपुस्तक एवं पूरक-पुस्तकों का छात्रों के सर्वांगीन विकास में भूमिका स्पष्ट कीजिये।
(2विभिन्न पाठ्य सहगामी गतिविधियों की छात्रों के विकास में भूमिका स्पष्ट कीजिये।

4.9 संदर्भ पुस्तकें

- कुमारी, सुशीला, (2010), ‘‘इतिहास –शिक्षण की आधुनिक विधियाँ’’, दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- जैन, आमिर चंद, (2013), ‘‘सामाजिक ज्ञान शिक्षण’’, जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- त्यागी, गुरसरनदास, (2015), ‘‘सामाजिक अध्ययन का शिक्षण’’, आगरा, अग्रवाल पब्लिकेशन।
- दीक्षित, उपेन्द्रनाथ तथा बघेला, हेतसिंग, (2014), ‘‘इतिहास शिक्षण’’, जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- पांडये, रमाकांत, (2012), ‘‘इतिहास शिक्षा’’, दिल्ली, अनुभव पब्लिकेशन।
- पांडये, शिवेन्द्र कुमार, (2013), ‘‘समाज अध्ययन –शिक्षण की आधुनिक विधियाँ’’, दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- वात्सायन, प्रो. टी., (2006), ‘‘भूगोल – शिक्षणकी आधुनिक विधियाँ’’, दिल्ली, लोक शिक्षा मंच।
- सक्सेना, राधारानी, (2013), ‘‘नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ’’, जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- शर्मा, माता प्रसाद, (2008), ‘‘नागरिकशास्त्र शिक्षण’’, जयपुर, अपोलो प्रकाशन।

इकाई- 5

विभिन्न विधाओं का शिक्षण

गद्य का शिक्षण, पद्य का शिक्षण, नाटक का शिक्षण रचना का शिक्षण, व्याकरण का शिक्षण आदि शिक्षण विधाओं का स्वरूप, वैशिष्ट्य, शिक्षण विधिओं के संदर्भ में आलोचना।

इकाई रचना

5.0 इकाई परिचय
5.1 शिक्षण के उद्देश्य
5.2 विषय विवेचन
    5.2.1 गद्य का शिक्षण
        5.2.1.1 गद्य का स्वरूप
        5.2.1.2 गद्य शिक्षण का उद्देश्य
        5.2.1.3 गद्य का शिक्षण विधियाँ
    5.2.2 पद्य का शिक्षण
        5.2.2.1पद्य का स्वरूप
        5.2.2.2 पद्य शिक्षण का उद्देश्य
        5.2.2.3 पद्य का शिक्षण विधियाँ
    5.2.3 नाटक का शिक्षण
        5.2.3.1नाटक का स्वरूप
        5.2.3.2 नाटक शिक्षण का उद्देश्य
        5.2.3.3 नाटक का शिक्षण विधियाँ
    5.2.4रचना का शिक्षण
        5.2.4.1रचना का स्वरूप
        5.2.4.2 रचना शिक्षण का उद्देश्य
        5.2.4.3 रचना का शिक्षण विधियाँ
    5.2.5 व्याकरण का शिक्षण
        5.2.5.1 व्याकरण का स्वरूप

        5.2.5.2 व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य
        5.2.5.3 व्याकरण का शिक्षण विधियाँ
5.3 सारांश
5.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर
5.5 शब्दावली
5.6 कार्य आवंटन
5.7 क्रियाएँ
5.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)
5.9 संदर्भ पुस्तकें

5.0 इकाई परिचय

शिक्षण विधियाँ

भाषा को विचारों भावों एवं इच्छाओं की अभिव्यक्ति का साधन माना जाता है। भाषा की पूर्णता के लिए लिखने पढ़ने बोलने तथा सुचने के कौशलों का विकास होना अत्यन्त आवश्यक होता है। भाषा अधिगम शिक्षण का क्षेत्र अधिक व्यापक होता है। अत : भाषा के उक्त घटकों को सीखने के लिए शिक्षण विधियों का भाषा के विभिन्न अंगों के साथ विश्लेषण करना आवश्यक है। **किसि साहित्य के अन्तर्गत विविध विधाओं का समावेश देखा जा सकता है।हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं में गद्य,पद्य,नाटक, काहानी, कथा, रचना आदि आतें है। उन बिधाओं को शिखने केलिए बिशिष्ट बिधियाँ भी है। वे विधाएं एवं संम्बन्धित शिक्षण विधियों का परिचय इस इकाई मे हो पायेगा।**

5.1 शिक्षण के उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित में सक्षम होंगे :

1. हिन्दी शिक्षण का विभिन्न विधायोंका ज्ञान प्राप्त करना।
2. हिन्दी शिक्षण की विभिन्न विधियों का ज्ञान प्राप्त करना।
3. हिन्दीशिक्षण की विभिन्नविधायोंका तंत्रोंका ज्ञान प्राप्त करना।
4. हिन्दी शिक्षण की विभिन्नविधायोंका वैशिष्ट्योंका ज्ञान प्राप्त करना।
5. हिन्दी शिक्षण का विभिन्न विधियाँ एवं शिक्षण विधिओं किउपयोगिता का ज्ञान प्राप्त करना।

6. विभिन्न विधाओं का पठन शैली का ज्ञान प्राप्त करना।

5.2 विषय विवेचन

5.2.1 ग|शिक्षण

प्रस्तावना

संस्कृत भाषा में गद्य साहित्य की उत्पति प्राचीन काल से ही है। यजर्वेद के ब्राह्मणग्रन्थों में उपनिपदों में गद्य साहित्य का निदर्शन मिलता है। गद्य को ज्ञानार्जन का उत्तम साधके रूप में माना जाता है।

5.2.1.1 गद्य का स्वरूप

ग्द्य साहित्य का निर्माण में सृजन क्षमता की पराकाष्टा नजर आता है। अतः कहा जाता है ''गद्य कविता निकषं वद्न्ति''। गद्य साहित्य विचारों की यशस्वी अभिव्यक्ति ही है। जो साहित्य रचना, लय, वृत्र गणमात्रा आदिओं से बन्धन रहित है उनको गद्य कहा जाता है। गद्य को भिन्न–भिन्न शैलियों के अनुसार गद्य रचना में सामान्यतः निबन्ध, कथा, आत्मकथा, चरित्र, नाटक, उपन्यास, एकांकि का आदि भेद होती है। श्रेष्ठ गद्य साहित्य वाचन से मन अल्हादित होता है। शब्द भजार में वृद्धि के लिए गद्य साहित्य बहुत उपयोगी होता है।

5.2.1.2 गद्य शिक्षण का उद्देश्य

- छात्रों का शब्दशक्ति का विकास होना
- गद्यांश पठन से शुद्ध उच्चारण का विकास होना
- संस्कृत भाषा का परिचय
- गद्य पाठों का भाव, विचार समझ में आना।
- साहित्य सर्जन के लिए प्रेरणा प्राप्त करना
- कल्पना शक्ति का विकास करना
- संस्कृत भाषा का उत्तम परिचय होना।
- विषय एवं आशयों का ग्रहण से ज्ञान प्राप्ति करना

5.2.2.3 गद्य का शिक्षण विधिया

सस्कृत गद्य शिक्षण में कई विधियों का प्रयोग किया जाता है। उनमें से कुछ विधियों को यह उल्लेख कर रहे है।

(1) अनुवाद पद्धति –

अनुवाद पद्धति गद्य शिक्षण का प्राचीन व लोकप्रिय पद्धति है। अर्थात हिंदी भाषा में विद्यमान गद्यांश को समझाने के लिए मातृ भाषा में अनुवाद कर के छात्रों को समझाया जाता है। कभि–कभि मातृभाषा व्यक्तित्र भाषा में

(2) अर्थ कथन पद्धति –

यह हिंदी गद्य की परम्परागत पद्धति है। इस विधि में अध्यापक सर्वप्रथम गंद्याशों पत्र क्रमिक रूप से मौखिक पठन करता है और इसके बाद गंद्यांश में आए कठिन शब्दों का अर्थ बताता है।

(3) व्याख्या विधि –

यह विधि अर्थ कथन विधि का ही विकसित कण है। इसमें अध्यापक मौखिक रूप से पठन करने के बाद शब्दों की और भावों की व्याख्या करता है।

(4) विश्लेषण विधि –

इस प्रणाली में शिक्षक शब्द एवं भावों की व्याख्या के लिए प्रश्नों आदि का सहारा लेता है। प्रत्येक वाक्य का दूसरे वाक्य से समन्वय करता है। एवं पूर्ण गंद्यांश का पाठ की दृष्टि से भावात्मक, विचारात्मक, रूप सें विश्लेषण करता है।

(5) संयुक्त विधि–

यह विधि सारी विधियों का मिश्रित रूप है। इसमें सारी विधियों का मिश्रित रूप से प्रयोग किया जाता है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. गद्य का स्वरूपबताइए **?**

2. गद्य शिक्षण का उद्देश्यबताइए ?

5.2.2 पद्य का शिक्षण

किसी भी भाषा साहित्य की आत्मा काव्य है। काव्य के द्वारा साहित्य में सौंन्दर्य का अविष्कार होता है। काव्य प्रारम्भ से ही हदय का विषय रहा है। काव्य में कवि की नवीन सुंदर कल्पना दिखती है अतः कहाँ जाता है ''जो न देखे रवि वो देखे कवि''

5.2.2.1 पद्य का स्वरूप

काव्य के स्वरूप काव्य के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए कई विद्वानों ने कई मत दिये। जैसे कि ''रसात्मक काव्यम'' विश्वनाथ कविराज्य ने कहा अर्थात रसा से युक्त वाक्य ही काव्य है। प. राजजगरनाथ अपने शब्दों में ''रभणीयार्थ प्रतिपादकः शब्द :

काव्यम'' अर्थात रमणीय अर्थो को प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य है। ''तददोषो शब्दार्थो सुगुणांवनलकृर्ती पुनः स्वाणि है। ही काव्य है ऐसा अभिनव गुप्त ''कहते है। अर्थात निर्दोष गुण युक्त बहुधा अलंकार युक्त शब्द काव्य है।

उपरोक्त भव्य लक्षणों से यह स्पष्ट होता है कि जिसके पढ़ने से मन को शांन्ति आनन्द रमण का प्राप्त होता है वह काव्य है।

5.2.2.2 पद्य शिक्षण का उद्देश्य

1) छात्रों में काव्य विषयक प्रेम निर्माण करना।
2) काव्यगत सौन्दर्य भाव रस आदि का अनुभव के प्रति प्रेरणा प्राप्त करना।
3) लय, भाव, गति, अनुसार काव्य पठन करने की योग्यता का निर्माण करना।
4) काव्य का प्रमुख भाव समझकर उसके साथ एक रूप होना।
5) छात्रों में कल्पना शक्ति का विकास करना।
6) छात्रों में तर्कशक्ति का विकास करना।
7) काव्य के विभिन्न विधाओं का परिचय प्राप्त करना।
8) काव्य मे निहित काव्यार्थ, व्यग्यार्थ, लक्षणार्थ को समझने में समर्थ होना।
9) छात्रों में काव्य रचना करने की क्षमता का विकास करना।
10) नैतिक मुल्यों का विकास करना।

5.2.2.3 पद्य का शिक्षण विधियाँ

1) गीत तथा अभिनय प्रणाली–

इस प्रणाली में गीत पद्य का सस्वर वाचान के साथ–साथ अभिनय का भी प्रयोग किया जाता है। अभिनय प्रधान पदों ने अंग संचालन का शिक्षण दिया जाता है। इसविधि से छात्रों ने काव्य के प्रति रुचि उत्पन्न होती है। कवितायें शीघ्र कंष्ठस्थ हो जाती है। इस विधि में ''करके सिखना'' नियम का प्रयोग किया जाता है।

2) अर्थबोध प्रणाली–

इस प्रणाली में शिक्षक स्वयं कविता का वाचन करता है। एक–एक पंक्ति के वाचन के साथ–साथ अर्थ भी स्पष्ट करता है परन्तु इस विधि से छात्र की रुचि का ध्यान नहीं रखा जाता है। यह विधि अध्यापक केन्द्रित होती है।

3) व्याख्या प्रणाली –

इस विधि में अध्यापक पदय के एक पद्य को लेकर अर्थ बताते हुए कवि का मत प्रवित्ति, रचना शैली, कविता की भाषा, रस, अलंकार, भाव आदियों का स्पष्टीकरण करता हैं। साथ–साथ कविता में विद्यमान अन्तर कथा को भी स्पष्ट करता है।

4) खण्डानवय प्रणाली–

इस प्रणाली को प्रश्नोत्तर तथा विश्लेषण प्रणाली भी कहते है जिस पद्य में विशषतों की अधिक्ता हो भावों की भरमार हो एवं एक–एक शब्द का अर्थ स्पष्ट किये बिना कविता का अर्थ स्पष्ट नहीं होता है वहाँ इस प्रणाली की आवश्यकता पड़ती है। अध्यापक इस प्रणाली में प्रश्नोत्तर क्रिया का करते हुए पद्य का विश्लेषण करता है।

5) व्यास प्रणाली–

इस प्रणाली में पद्यय के पद्यों को भाषा और भाव दोनों की दृष्टि से विश्लेषण किया जाता है। भावों का स्पष्टीकरण के लिए अध्यापक अनेक उदाहरणों, दृष्टान्तों तथा सुक्तियों का प्रयोग करता है। भाषा की दृष्टि से एक–एक शब्द उपादेयता वाक्य विन्यास का स्पष्टीकरण करता है। अतः इस विधि में पदोन वाले का ज्ञान गहन होना आवश्यक है। इस विधि का टिका विधि कही जाती है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. पद्य का स्वरूप बताइए ?
2. पद्य शिक्षण का उद्देश्य बताइए ?

5.2.3 नाटक का शिक्षण

प्रस्तावना

भारत में नाटय कला की उत्पत्ति वेद काल से है। वेद के उषा वर्णन, पुरुर्वा, उर्वशी, में यह स्पष्ट होता है। एवं भरत का नाट्य शास्त्र जग प्रसिद्ध है। नाटक को संचार माध्यम का एक प्रभावी माध्यम भी माना जाता है।
अतः नाटक शिक्षण भी शिक्षण में एक महत्वपूर्ण अंश है।

5.2.3.1 नाटक का स्वरूप

नाटक भाव अविष्कार का उत्तम साधन है। प्राचीन संस्कत्रत साहित्य में नाटक को दृश्यकाव्य माना गया था। रुपके रुप में नाटक को दस भेदो के बाटा जाता था। विषय वस्तु की दृष्टि मे नाटक को ऐतिहासिक, पौराणिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, एवं शैक्षिक आदि भेदो से बाटा जा सकता है। नाटक में संवाद गद्य में होता है कभी–कभी पद्य रूप भी देखा जाता है। जिसको गितीय नाट्य कहा जाता है।

5.2.3.2 नाटक शिक्षण का उद्देश्य

1) छात्रों ने आरोह अवरोह के अनुसार संवाद करने की योग्यता का निर्माण करना।
2) संवाद ने निहित आशयों के अनुसार हाव–भाव निर्माण की योग्यता उत्पन्न

करना।
3) अभिनव कला से परिचित कराना।
4) मानव चरित्र एवं स्वभाव का ज्ञान प्राप्त करना।
5) विभिन्न जीवन दर्शनों का ज्ञान प्राप्त करना।
6) अनुकरण की क्षमता का विकास करना।
7) भाषीक ज्ञान में विकास करना।
8) स्वतः की भावना को प्रभावी रूप मे प्रकट करने की क्षमता प्राप्त करना।
9) विभिन्न नाटक विषयक ज्ञान प्राप्त करना।
10) स्वस्थ मनोरंजन एवं हितरक उपदेशों को सहाज माध्यम से प्राप्त कराना।

5.2.3.3 नाटक का शिक्षण विधियाँ

1) **व्याख्या प्रणालि**– इस विधि में अध्यापक समस्त नाटक का स्वयं वाचन करता है और नाटक के लेखक, पात्र, प्रयोजन, घटनाएँ, कथावस्तु, कथनोव कथन, चरित्र, चित्रण, भाषाशैली, भाव आदि पर स्वयं ही प्रवचन करता चलता है। जिससे नाटक के विभिन्न पक्षों का सौन्दर्य एवं विशेताएँ प्रकट हो जाती है।

2) आदर्श नाट्य प्रणाली – इस विधि में अध्यापक स्वयं ही नाटक का वाचन करता है किन्तु यह वाचन वाचिक अभिनय होता है। अतः विभिन्न पात्रों के अनुकूल भाषा में उतार–चढ़ाव आ जाता है। इस प्रणाली से छात्रों से छात्रों का मनोरंजन तो होता है परन्तु निस्क्रीय होता है।

3) **रंगमंच प्रणाली**– इस प्रणाली में छात्रों में एक–एक पात्र की भूमिका अदा करते है। पहले पात्र की पूरी भूमिका छात्र अभ्यास करलेते है और बाद में सभी छात्र मिलकर पूरे नाटक को रंगमंच पर उपस्थ्थापित करते है। यह पद्धति उत्तम है परन्तु वि|ालयों में साधनों का अभाव के वजह से प्रायः सफल नही हो पाता।

4) **कक्षा अभिनय प्रणाली**– इस विधि में छात्र एक–एक पात्रों के अनुसार वाचित अभिनय करते है। प्रथमत प्रत्येक छात्र एक पात्र का संवाद अच्छी तरह से पढ़कर समझ लेता है और बाद में कक्षा में ही पात्रों के अनुसार वाचन करते है। यह प्रणाली कक्षा की दृष्टि से अत्यन्त योग्य एवं सख्त होती है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. नाटक का स्वरूपबताइए ?
2. नाटक का शिक्षण विधियाँबताइए ?

5.2.4 रचना का शिक्षण

प्रस्तावना

छात्र भाषणत्मक अभिव्यक्ति में बहुत–कुछ बोलने में समर्थ होता है परन्तु अपने विचारों को लेखन के जरिऐ अभिव्यक्त करने में उतना समर्थ नही हो पाता अतः रचना शिक्षण का महत्व है। अतः रचना का अर्थ वाक्यों को सजाना, बनाना, क्रमबध्य करना भी कहा जा सकता है।

5.2.4.1 रचना का स्वरूप

शिशु बहुत सारे शब्द कहता है वाक्य भी बनता है। परन्तु कभी–कभी वह वाक्य सार्थकता, आकांक्षा, विचारों, भावों की दृष्टि से योग्य नही होता है। अतः वाक्य रचना में कई सारी विशेषताएँ होती है। जैसा की पदक्रम, स्पष्टता, आंकाक्षा, सामर्थ्य, मधुरता आदि है पदक्रम में कर्ता, कर्म, क्रिया आदि कारकें आकांक्षएँ, श्रोता की उत्तकूष्ठा शान्त होना अनिवार्य है। सामर्थ की दृष्टि से वाक्य श्रोता के अवगम योग्य हो एवं मधुरता की दृष्टि से वाक्य कर्म कटुन हो। इन विशेषताओं के साथ वाक्य रचना के पश्चात उन वाक्यों को विविध विधाओं में रचना पढ़ता है। जो कि रचना की विधाएँ होती है ये विधाएँ अनुछेच्द रचना, पद्य रचना, वाक्य रचना, मधूरचना, प्रश्न की रचना आदि हो सकती है।

5.2.4.2 रचना शिक्षण का उद्देश्य

1) सरल शब्दों से अपने भावों को व्यक्त करने में समर्थ बनाना।
2) प्रश्नों के उत्तर व्यस्थित रूप से देने में समर्थ होना।
3) छत्रों में शुद्ध, स्पष्ट, सुन्दर लिखने की क्षमता का निर्माण करना।
4) स्वतः का भाव प्रभावी शब्दों में लिखकर व्यक्त करने में समर्थ होना।
5) लेखन में सुक्तियों का लोकोक्तियों का मुहावरों का प्रयोग में समर्थ करना।
6) दीर्घ अनुच्छेदों का सारांक्ष लिखने में समर्थ होना।
7) किसी भी वीषय पर अपने विचारों के साथ अनुच्छेद निर्माण होने में समर्थ होना।
8) संवाद लिखने की क्षमता विकसित करना।
9) प्रभावि पत्र लेखन की क्षमता निर्माण करना।
10) लघु–लघु पद्यों का निर्माण करने में समर्थ होना।

5.2.4.3 रचना का शिक्षण विधियाँ

1) **चित्र–लेखन विधि** – इस विधि में अध्यापक छात्रों को नही, पक्त, सुर्य, वृक्ष, फल, पुष्प, इत्यादियों का चित्र दिखाकर प्रश्न करता है। उन प्रश्नों का उत्तर छात्र पूर्ण वाक्यों में देने का प्रयत्न करता है।

2) **प्रश्नोत्तर विधि** – इस विधि में अध्यापक छात्रों के अनुभव संम्बन्धित विषयों से प्रश्न पूछता है। छात्र अपने अनुभव से एवं कल्पना से लघु–लघु वाक्यों के साथ शुद्ध स्पष्ट शब्दों से उत्तर लिखता है एवं अध्यापक उसके वाक्य संरणनागत त्रुटियों में सुधार करता है।

3) **शून्य स्थान पूर्तिविधि** – इस विधि में अध्यापक छात्रों के संम्मुख रिक्त स्थान युक्त वाक्य अथवा अनुच्छेद उपस्थान करता है। जिन शुन्य सीानों को कई विकल्प शब्दों से पूर्ण किया जा सकता है। छात्र अपने शब्द शक्ति के सहायता से शुन्य सीानों को भरता है और वाक्य पूर्ण करता है।

4) **शब्द पिरवर्तन विधि** – इस विधि में अध्यापक ऐसे कुछ वाक्य अथवा अनुच्छेदों को प्रस्तुत करता है जिसमें कई शब्द अधो रेखांकित होते है। छात्रों को अधोरेखांकित शब्दों के जगह किसी नूतन शब्द का प्रयोग करना होता है। और अपने विचारों, स्मृति एंव शब्द शक्ति के द्वारा उन शब्दों के जगह नूतन शब्द लिखता है।

5) **प्रश्नरचना विधि** – इस विधि में अध्यापक उत्तरात्मक वाक्य एवं अनुच्छेदो का उपस्थापन करता है एवं अनुच्छेद से अलग–अलग प्रकार के प्रश्न निर्माण करने के निर्देश देता है। छात्र अपने प्रश्नात्मक क्षमता से कई सारे प्रश्न निर्माण करते है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. रचना का स्वरूपबताइए ?

………………………………………………………………………………………………

………………………………………………………………………

2. रचना शिक्षण का उद्देश्यबताइए ?

5.2.5 व्याकरण का शिक्षण

प्रस्तावना

किसी भी भाषा में व्याकरण का स्थान महत्वपूर्ण है। भाषा और व्याकरण एक दुसरे से ..... है। भाषा का विभास की दृष्टि से भी व्याकरण का विशेष महत्व है। अतः भाषा में परिपक्वता प्राप्त करने के लिए व्याकरण शिक्षण की आवश्यकता है।

5.2.5.1 व्याकरण का स्वरूप

व्याकरण शब्द व्या, आ, उपसर्ण, कृ, धातु, ऋ प्रत्यय से बनता है। जिसका अर्थ ''व्याकृत्यन्ते, वृटपादयन्ते शब्द अनेन इतिव्याकरण'' जिसके द्वारा अर्थ स्वरूप से शब्द सिद्ध होता है। पतंजलि के शब्दों में ''शब्दानुशासन ही व्याकरण है।''

अर्थात जिसके द्वारा भाषा को व्यवस्थित किया जाता है। दार्शनिकों ने जो भाषा के स्वरूप, संरचना तथा कार्यो को स्पष्ट करता है उसको व्याकरण ....व्याकरण में शब्द के

स्वरूप शब्दार्थ संम्बन्धन वाक्य संरचना, आदि दृष्टि से कार्य किया जता है। व्याकरण मे वर्ण, शब्द, वाक्य, वर्णो का उभारण शब्दों के प्रत्यय एवं उपसर्ग, वाक्य में पदक्रम एवं कारक वाक्य की भिन्न–भिन्न विधाएँ आदि तत्वों के ऊपर ध्यान दिया जाता है।

5.2.5.2 व्याकरण शिक्षण का उद्देश्य

1) ध्वनि शास्त्र को समझने में छात्रों को समर्थ बनाना।
2) शब्द एवं धातुओं के विभिन्न रूपों को जानने में समर्थ बनाना।
3) शुद्ध वाक्य निर्माण करने योग्यता उत्पन्न करना।
4) छात्रों में तर्क शक्ति निरिक्षण, क्षमता का विकास करना।
5) भाषा संम्बन्धित गुण दोषों को समझने की क्षमता उत्पन्न करना।
6) नूतन शब्दों का निर्माण करने में समर्थ बनाना।
7) व्याकरण तत्वों को भाषा में प्रयोग करने की क्षमता विकसित करना।
8) विशिष्ट साहित्यों का अर्थग्रहण करने योग्य बनाना।
9) उच्चारण और लेखन के बीच संम्बन्ध स्थापन में समर्थ बनाना।
10) एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने में समर्थ बनाना।

5.2.5.2 व्याकरण शिक्षण का विधियाँ

(1) पाठ्य पुस्तक प्रणाली–

इस प्रणाली में व्याकरण पुस्तक को सस्वर पुस्तक वाचन कराया जाता है। एवं पाठ्य–पुस्तक को आधार बनाकर बिना समझ से व्याकरण के नियमों को उपनियमों को रटाया जाता है। यह विधि अमनोवैज्ञानिक होता हे। इस विधि को पारायण विधि भी कहाँ जाता है।

(2) अव्याकृति प्रणाली–

इस विधि में व्याकरण मे शिक्षा की अलग महत्वा स्वीकार नही किया जाता अत : उत्तम व्याकरण निष्ट रचनाओं के अध्यापन से ही व्याकरण सीखाया जाता है। क्योंकि उत्तम रचनाओं के अध्ययन से भाषा पर अधिकार पाया जा सकता है। यह विधि छोटी कक्षाओं के लिए निरर्थक सिद्ध होगा।

(3) निगमन विधि–

इस पद्धति में प्रथमत : व्याकरण के नियमों को स्पष्ट किया जाता है, तत्पश्चात नियमों का उदाहरण के सहायता से पूष्टि की जाती है। अर्थात नियमों का अथवा सिद्धांन्तों का व्यवहार में उपयोग संम्बन्धित ज्ञान दिया जाता है। यह पद्धति सामान्य से विशेष की ओर शिक्षण सूत्र पर आधारित है। परन्तु यह प्रणाली ऊची कक्षाओं के लिए योग्य होती है।

(4) आगमन पद्धति–

यह पद्धति उदाहरणों से सूत्रों की ओर शिक्षण सूत्र के ऊपर आधरित है। इसविधि में प्रथमत : उदाहरणों का उपस्थापन किया जाता है। तत्पश्चात उदाहरणों के विश्लेषण से सामान्य गुण धर्मो का एकत्रिकरण किया जाता है। सामान्य गुण धर्मों का सामान्यीकरण से सिद्धांन्तों अथवा नियम का निर्धारण किया जाता है। एकं निर्धारित नियम का पाठ्य–पुस्तकों में लिखित सिद्धांन्तों के साथ समन्वय किया जाता है। यह विधि निगमन विधि के विपरीत विधि है।

अपनी प्रगति की जाँच – 1

1. व्याकरण का स्वरूपबताइए ?
2. व्याकरण शिक्षण का उद्देश्यबताइए ?

....

....

5.3 सारांश

किसि साहित्य के अन्तर्गत विविध विधाओं का समावेश देखा जा सकता है। हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं में गद्य, पद्य, नाटक, काहानी, कथा, रचना आदि आतें है। उन बिधाओं को शिखने केलिए बिशिष्ट बिधियाँ भी है। गद्य के लिए अनुवाद पद्धति, अर्थ कथन पद्धति, व्याख्या विधि, विश्लेषण विधि, संयुक्त विधियाँ आदि विधियाँ,**पद्य के लिए** गीत तथा अभिनय प्रणाली, अर्थबोध प्रणाली, व्याख्या प्रणाली, खण्डानवय प्रणाली, व्यास प्रणाली, **नाटक के लिए** व्याख्या प्रणालि, आदर्श नाट्य प्रणाली, रंगमंच प्रणाली, कक्षा अभिनय प्रणाली, **व्याकरण केलिए**पाठ्य पुस्तक प्रणाली, अव्याकृति प्रणाली, निगमन विधि, आगमन पद्धति **एवं रचना केलिए** चित्र–लेखन विधि,

प्रश्नोत्तर विधि, शून्य स्थान पूर्तिविधि, शब्द परिवर्तन विधि, प्रश्नरचना विधि**उपयुक्त मानी** जाती है।

5.4 अपनी प्रगति की जाँच के लिए अपेक्षित उत्तर

अपनी प्रगति की जाँच –

उत्तर- अध्याय 4.2 देखे।

5.5 शब्दावली

गद्य शिक्षण

गद्य शिक्षण का मुख्या उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्ञान, अर्थ बोध, शब्द भंडार वृधि में सहायता पहुँचाना

मुखर्जी

पाठ्यपुस्तक विधि :

“पाठ्यपुस्तक विधि शिक्षण की वह प्रक्रिया है, जिसका तत्कालीन उद्देश्य पाठ्यपुस्तक में निहित सूचनाओं की समझदारी प्रदान करना होता है।”

- वेस्ले ई. बी.

व्याख्यान विधि

बड़ी कक्षाओं में प्रयोग की जाने वाले पद्धति व्याख्यान एक व्यावहारिक विधि है।”

- बाईनिंग एवं बाईनिंग

अभिनय विधि :

“अभिनय का अर्थ अतीत या वर्तमान की किसी स्थिति को क्रिया और जीवन देना है। इसका प्रयोग जिस विधि में किया जाता है, उस विधि को नाट्य रूपांतरण या भूमिका अभिनय विधि कहा जाता है।

5.6 कार्य आवंटन

1) व्याकरण शिक्षण की विधियों को स्पष्ट कीजिये।
2) छात्र का रचनात्मक विकास में प्रभावि उपाय स्पष्ट कीजिये।

5.7 क्रियाएँ

1) गद्य शिक्षण की विभिन्न विधियों की उपयोगिता का वर्णन कीजिये।
2) नाटक शिक्षण की भाषा शिक्षण में भूमिका बताईये।

5.8 प्रकरण अध्ययन (केस स्टडी)

1) व्याकरण शिक्षण के आगमन निगमन बिधियों का तुलना करें।

2) रचना शिक्षण में गद्य शिक्षण कि भूमिका स्पष्ट करें।

5.9 संदर्भ पुस्तकें

- सक्सेना, राधारानी, (2013),"नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ", जयपुर, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी।
- गुप्त, मनोरमा – भाषा अधिगम, केंद्रीय हिन्दी संस्थान,आगरा
- गुनानंद- हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास, विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा
- चतुर्वेदी आचार्य सीताराम- भाषा कि शिक्षा, हिन्दी साहित्य कुटीर, वाराणासी
- तिवारी, भोलानाथ –हिन्दी भाषा, किताब महल, इलाहाबाद
- द्विवेदी, देवीशंकर – भाषा और भाषिकी, भाषा-विज्ञान-विभाग,सागर वि.वि , सागर
- पांडेय, रामाशकल –हिन्दी शिक्षण, अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
- चतुर्वेदी, शिखा – हिन्दी शिक्षण, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा शास्त्र की भूमिका
- शर्मा, देवेन्द्रनाथ – भाषा विज्ञानं की भूमिका,राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

निवेदन- विगत कुछ वर्षों से सेवारत शिक्षकों के लिए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम उथल पुथल के दौर से गुजरा है। इस संदर्भ में नयी पाठ्यचर्या को लागू करना और उसके अनुसार समय की सीमा के अन्तर्गत अध्येताओं को सामग्री उपलब्ध करवाना एक चुनौती भरा कार्य था। इस चुनौती को जिन लेखकों और संकलनकर्ताओं की मदद से सुगम किया गया, वे सब बधाई के पात्र हैं। प्रत्येक अध्ययन सामग्री में जिन मूल पुस्तकों का सहयोग लिया गया है, उनका यथासंभव संदर्भ ग्रन्थों के रूप में उल्लेख किया गया है। लेखक और संकलनकर्ता मूल ग्रन्थों के लेखकों के उद्यम और बौद्धिक सक्रियता का सम्मान करते हैं और इनके प्रति आभार ज्ञापित करते हैं। यदि यह ज्ञात होता है कि किसी मूल ग्रन्थ का नामोल्लेख रह गया है तो उसे भी हम साभार सम्मिलित करेंगे। पाठकों से अनुरोध है कि वे अपना फीडबैक उपलब्ध कराते रहे जिससे इस सामग्री को उत्तरोत्तर गुणवत्ता संपन्न किया जा सके।